अल्लाह की मदद क्यों रुक गई?

डा० मसऊदुद्दीन उसमानी

अल्लाह की मदद क्यों रुक गई?
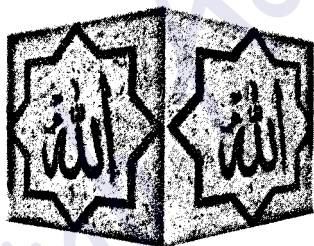
डा० मसऊदुद्दीन उस्मानी

www.idaraimpex.com

अल्लाह की मदद क्यों रूक गई?

डा० मसऊदुद्दीन उसमानी

Allah ki Madad Kiyun Ruk Gai?

प्रकाशन : 2012

ISBN 81-7101-555-7

TP-153-12

Published by Mohammad Yunus for

IDARA IMPEX

D-80, Abul Fazal Enclave-I, Jamia Nagar
New Delhi-110 025 (India)
Tel.: 2695 6832 Fax: +91-11-6617 3545
Email: **sales@idaraimpex.com**
Visit us at: **www.idarastore.com**

Designed & Printed in India

Typesetted at: **DTP Division**
IDARA ISHA'AT-E-DINIYAT
P.O. Box 9795, Jamia Nagar, New Delhi-110025 (India)

विषय-सूची

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِىَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰـهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ۔ امابعد!

लोगो! क्या झुकी हुई गरदनें यों ही झुकी रहेंगी और ये माथे यों ही ठुकराए जाएंगे? इन मुंहों (चेहरों) पर इसी तरह थूका जाएगा? ये बस्तियां यों ही उजड़ेंगी? नव-नहाल इसी तरह छेदे जाते रहेंगे? यह आबरू यों ही पामाल और ख़राब व ख़स्ता रहेगी? सर छुपाने को एक आसरा न मिलेगा और क्या तुम दुनिया और आख़िरत दोनों का सुकून यों ही खो दोगे?

होशमंदो! तुम जिस मालिक पर ईमान लाए हो, उसका फ़रमाना तो यह है कि 'व अन्तुमुल अअ़लौ-न इन कुन्तुम मोमिनीन' —आले इमरान : 139

(तुम ही ग़ालिब रहोगे,सरफ़राज़ी और कामरानी तुम्हारा हक़ है, बस शर्त यह है कि तुम मोमिन हो जाओ।)

अगर अल्लाह के इस फ़रमान को हक़ मानते हो, तो यह भी मानो कि अब तुम उस ईमान वाले नहीं रहे, जिस ईमान से दुनिया और आख़िरत की सरबुलन्दी और ताजदारी का वायदा किया गया था। सबूत चाहिए तो एक तरफ़ मस्जिदों में झांक कर देखो और दूसरी तरफ़ क़ब्रों और आसमानों पर अक़ीदत रखने वालों के हुजूम को देखो, यह हक़ीक़त खुल कर सामने आ जाएगी कि अक़ीदत के साथ-साथ दुकानदारी ने ईमान के साथ क्या मामला किया है, क्या-क्या गुल खिलाए हैं, बुज़ुर्गों और औलिया अल्लाह की क़ब्रों की क़ीमत वसूल की जा रही है और मन्न व सलवा समझ कर खाई जा रही है, वहां मुजावरी और क़लन्दरी है, सज्दे और तवाफ़ हैं, रोना और धोना है, शीरीनी और चादरें हैं, चरस और भंग है, नंगापन और बेहयाई है, गाना और बजाना

है, उर्स और मेले हैं, मन्नतें और मुरादें हैं, तबर्रूक और चढ़ावे हैं, ग़रज़ हर वह चीज़ है जिससे अल्लाह तआ़ला की किताब और उसके नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मना फ़रमाया था और जिसमें मुब्तला होने वालों को दुनिया में ज़िल्लत और आख़िरत में जहन्नम की आग से डराया था।

عَنْ جُنْدُبٍ ﷺ قَالَ سَمِعْتُ النَّبِیَّ ﷺ يَقُوْلُ اَلَاوَ اِنَّ مَنْ كَانَ قَبْلَكُمْ كَانُوْا يَتَّخِذُوْنَ قُبُوْرَ اَنْبِيَائِهِمْ وَصَالِحِيْهِمْ مَسَاجِدَ اَلَا فَلَا تَتَّخِذُوا الْقُبُوْرَ مَسَاجِدَ اِنِّیْ اَنْهَاكُمْ عَنْ ذَالِكَ (مشکوۃ:٦٩، رواہ مسلم)

‘हज़रत जुन्दुब रज़ियल्लाहु अन्हु रिवायत करते हैं कि मैने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को यह फ़रमाते हुए सुना कि लोगो! कान खोल कर सुनलो कि तुमसे पहले जो लोग गुज़रे हैं उन्होनें अपने नबियों और अपने वलियों की क़ब्रों को इबादतगाह और सज्दागाह बना लिया था, सुनो, तुम क़ब्रों को सज्दागाह न बनाना। मैं इस बात से तुमको मना करता हूं। (इस हदीस को बयान किया इमाम मुस्लिम ने) —मिश्कात : 69

क़ुरआन करीम में इस बुरे और गन्दे काम से रोकने के लिए कितना मानी से भरा हुआ इल्मी बयान आया है—

وَالَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللهِ لَايَخْلُقُوْنَ شَيْئًا وَّهُمْ يُخْلَقُوْنَ ۞ اَمْوَاتٌ غَيْرُ اَحْيَاءٍ وَمَايَشْعُرُوْنَ اَيَّانَ يُبْعَثُوْنَ (نحل ۲۰-۲۱)

‘और अल्लाह के अलावा दूसरी हस्तियां, जिनको लोग (अपनी ज़रूरतें पूरी करने के लिए पुकारते हैं, वे किसी चीज़ को भी पैदा करने वाली नहीं है, बल्कि खुद पैदा की गई हैं, मुर्दा हैं, न कि ज़िंदा और उनको यह तक मालूम नहीं है कि उन्हें कब दोबारा ज़िंदा करके उठाया जाएगा।’ —अन-नह्ल 20-21

ये लफ़्ज़ साफ़ बता रहें हैं कि यहां ख़ास तौर पर जिन बनावटी माबूदों की तर्दीद की जा रही है,वे न तो बुत हो सकते हैं और न शैतान और फ़रिश्ते, बल्कि साफ़-साफ़ मुराद क़ब्र वालों से है, क्योंकि शैतान और फ़रिश्ते तो ज़िंदा हैं, उन पर ‘अमवातुन ग़ै-रु अह्या’ (मुर्दे हैं न कि ज़िंदा) की बात फ़िट नहीं

बैठती, रहे लकड़ी और पत्थर के बुत, तो उनके लिए दोबारा ज़िंदा करके उठाए जाने का सवाल ही पैदा नहीं होता, तो ज़रूरी है 'वमा यशउरू-न अय्याना युबअ़सून' (उनको यह भी ख़बर नहीं कि उन्हें कब दोबारा ज़िंदा करके उठाया जाएगा) से मुराद नबी, शहीद, नेक लोग और दूसरे ग़ैर-मामूली इंसान ही हो सकते हैं, जिनको उनके मानने वाले 'दस्तगीर', दाता, गंजबख़्श, मुश्किल कुशा, फ़रियाद रस, ग़रीब नवाज़ और न जाने क्या-क्या क़रार देकर ज़रूरत पूरी करने के लिए पुकारना शुरू कर देते हैं। अब अगर कोई यह कहे कि अरब देश में इस तरह के माबूद नहीं पाए जाते थे, तो यह उसकी तारीख़ न जानने का खुला सबूत है, क्योंकि हर तारीख़ जानने वाला जानता है कि अरब में कई क़बीले, जैसे रबीआ, ग़स्सान, कल्ब, तग़लब, क़ज़ाआ, कनाना, हर्स, काब, कुन्दा, वग़ैरह में ज़्यादा से ज़्यादा ईसाई और यहूदी पाए जाते हैं और ये दोनो मज़हब नबियों, वलियों और शहीदों की पूजा बुरी तरह कर रहे थे और इसी तरह मुश्रिकों के बहुत से माबूद गुज़रे हुए इंसान ही तो थे, जिन्हें बाद की नस्लों ने ख़ुदा बना लिया था। बुख़ारी में इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु की रिवायत है कि नूह की क़ौम के वद्द, सुवाअ़, यग़ूस, यऊक़, और नस्र, ये सब अल्लाह के वली थे, जिन्हें बाद के लोग खुदा बना कर पूजने लगे, कुछ उनकी क़ब्रों से वाबिस्ता हो गए और कुछ ने उनके मुजस्समे और बुत बनाकर पूजना शुरू कर दिया। अरब में भी इनकी ख़ूब पूजा हो रही थी। इसी तरह हज़रत आइशा रजियल्लाहु अन्हा की रिवायत में है कि इसाफ़ और नाइला दोनों इंसान ही थे। —माख़ूज़

عَنْ اِبْنِ عَبَّاسٍ ﷺ فِیْ قَوْلِهٖ تَعَالٰی (وَقَالُوْا لَاتَذَرُنَّ اٰلِهَتَكُمْ وَلَاتَذَرُنَّ وَدًّا وَّلَا سُوَاعًا وَلَا یَغُوْثَ وَیَعُوْقَ وَنَسْرًا) (نوح:٢٣)

'इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा कि अल्लाह तआ़ला का यह क़ौल 'और नूह की क़ौम के सरदारों ने कहा कि अपने माबूदों को हरगिज़ न छोड़ना और देखो, वद्द, सुवाअ़, यग़ूस, यऊक़, और नस्र से हरगिज़ अलग़ न होना। —नूह : 23

قَالَ اِبْنُ عَبَّاسٍ ﷺ اِنَّ هٰؤُلَآءِ كَانُوْا قَوْمًا صَالِحِيْنَ فِيْ قَوْمِ نُوْحٍ فَلَمَّا مَاتُوْا عَكِفُوْا عَلٰى قُبُوْرِهِمْ ثُمَّ صَوَّرُوْا تَمَاثِيْلَهُمْ فَعَبَدُوْهُمْ ثُمَّ صَارَتْ هٰذِهِ الْاَوْثَانُ فِيْ قَبَآئِلِ الْعَرَبِ

(مستفاض من كتب التفاسير والبخارى)

'इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा कि ये सब वद्द, सुवाअ वग़ैरह नूह अलैहिस्सलाम की क़ौम के औलिया अल्लाह थे। जब वे मर गए तो लोग उनकी क़ब्रों से जुड़ गए और फिर उनकी इबादत करने लगे, फिर यही बुत अरब के क़बीलों में फैल गए।'

यही बात क़ुरआन करीम में दुनिया के परवरदिगार ने फ़रमाई—

اِنَّ الَّذِيْنَ تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ عِبَادٌ اَمْثَالُكُمْ فَادْعُوْهُمْ فَلْيَسْتَجِيْبُوْا لَكُمْ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ (اعراف:١٩٤)

'तुम लोग अल्लाह को छोड़कर जिन्हें पुकारते थे, वे तो सिर्फ़ अल्लाह के बन्दे हैं, जैसे तुम बन्दे हो, उनसे दुआएं मांग कर देखो, ये तुम्हारी दुआओं का जवाब दें, अगर उनके बारे में तुम्हारे ख़्याल सही हैं। —अल-आराफ़: 194

मालूम हुआ कि रिसालत का नारा, 'या रसूल' नारा-ए-हैदरी 'या अली' और नारा-ए-ग़ौसिया, सारे के सारे नारे मुसलमान और मोमिन के बहर हाल नहीं हैं, मोमिन का तो एक ही नारा 'अल्लाहु अकबर' है। यही नारा नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और सारे सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम ने लगाया है।

आज इस उम्मत पर निगाह डालिए तो यही नक़्शा नज़र के सामने होगा, कहीं क़ब्र लोगों की मस्जूद (जिसका सज्दा किया जाए) है, कहीं कोई आसताना है, जिसकी चौखट पर माथा टेका जा रहा है, किसी को दस्तगीर, किसी को ग़ौस, किसी को मुश्किल कुशा पुकारा जा रहा है और वे घर, जहां पेशानियों को झुकना चाहिए, खाली पड़े हैं और उस ज़ात के साथ जो सही मानों में दस्तगीर, मुश्किल कुशा और हाजत रवा है, यों शरीक ठहराये जा रहे हैं, अब अगर कायनात के मालिक का ग़ुस्सा इस उम्मत पर न भड़के और वह उसके अज़ाब के कोड़े की हक़दार न ठहरे, तो और क्या हो, दुनिया के परवरदिगार को सबसे ज़्यादा नफ़रत

इस बात से है कि उसके साथ किसी और को शरीक ठहराया जाए या उसको छोड़ कर किसी और को हाजत रवा और मुश्किल कुशा मान लिया जाए। इस बात को कहीं वह 'बड़े ज़ुल्म' का नाम देता है, जैसे सूरः लुक़मान में है कि—

إِنَّ الشِّرْكَ لَظُلْمٌ عَظِيمٌ (لقمان:١٣)

'इन्नश- शिर- क ल-ज़ुल्मुन अज़ीम' —लुक़मान :13

सच तो यह है कि शिर्क सबसे बड़ा ज़ुल्म है और मालिक शिर्क को गाली के नाम से याद करता है, जैसा कि बुख़ारी की रिवायत में है 'इब्ने आदम मुझे गाली देता है', हद यह है कि जो आदमी भी इस गन्दगी में लथ-पथ होकर बग़ैर तौबा के मर जाए, उसको अल्लाह तआला कभी माफ़ नहीं करेगा और वह हमेशा जहन्नम की आग में जलता रहेगा, चाहे उसने नमाज़ों पर नमाज़ें पढ़ी हों, रोज़ों पर रोज़े रखे हों और हजों पर हज किये हों, क़ुरआन की अनगिनत आयतें इस पर गवाह हैं—

إِنَّ اللّٰهَ لَا يَغْفِرُ اَنْ يُّشْرَكَ بِهٖ وَيَغْفِرُ مَادُوْنَ ذٰلِكَ لِمَنْ يَّشَآءُ ط

(نساء:١١٦)

'अल्लाह के यहां बस शिर्क ही की बख़्शिश नहीं है, इसके सिवा सब कुछ माफ़ हो सकता है, जिसको वह माफ़ करना चाहे'।

शिर्क से अल्लाह तआला इतना बेज़ार है कि सूरः अनआम में अठारह बुज़ुर्ग नबियों की फ़ज़ीलतों का ज़िक्र करने के बाद फ़रमाया है कि अगर इनमें से कोई शिर्क कर बैठता, तो उसके सारे आमाल ग़ारत हो जाते।

وَلَوْ اَشْرَكُوْا لَحَبِطَ عَنْهُمْ مَاكَانُوْا يَعْمَلُوْنَ (انعام:٨٨)

'लेकिन अगर कहीं इन लोगों (नबियों) ने शिर्क किया होता, तो इन सब का किया कराया ग़ारत हो जाता।' —अनआम 88

खुद नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से मुख़ातब होकर फ़रमाया कि तुमको और तुमसे पहले गुज़रे हुए सारे नबियों को वह्य भेज कर बतलाया गया है कि—

لَئِنْ اَشْرَكْتَ لَيَحْبَطَنَّ عَمَلُكَ وَلَتَكُوْنَنَّ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ (زمر:٦٥)

'अगर (बफ़र्ज़ महाल) तुमने शिर्क किया तो तुम्हारे अमल का सरमाया बेकार न जाएगा और तुम दीवालिया हो जाओगे।' —ज़ुमर : 65

पिछली उम्मतों को शिर्क की लानत में मुब्तला करने में क़ब्रों का बहुत बड़ा हिस्सा है, इसी लिए नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने शुरू में लोगों को क़ब्रों पर जाने से मना कर दिया था, फ़िर जब इजाज़त दी तो उसके साथ यह पाबन्दी लगा दी कि कुछ मांगने के लिए नहीं, बल्कि इबरत हासिल करने के लिए जाओ, आख़िरत को याद करने और दुनिया से बे-रग़बती पैदा करने के लिए जाओ।

عَنْ اِبْنِ مَسْعُوْدٍ ﷺ اَنَّ رَسُوْلَ اللّٰهِ ﷺ قَالَ كُنْتُ نَهَيْتُكُمْ عَنْ زِيَارَةِ الْقُبُوْرِ فَزُوْرُوْهَا فَاِنَّهَا تُزَهِّدُ فِى الدُّنْيَا وَتُذَكِّرُ الْاٰخِرَةَ

(ابن ماجه وفى المسلم تذكر الموت، مشكوٰة ١٥٤)

अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु रिवायत करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि लोगो! मैंने तुमको क़ब्रों पर जाने से मना कर दिया था, लेकिन अब इजाज़त देता हूं, क्योंकि क़ब्रों को देख कर दुनिया से बे-रग़बती पैदा होती है, और आख़िरत याद आती है। (इब्ने माजा) और मुस्लिम में है कि ये क़ब्रें मौत याद दिलाती हैं। —मिश्कात : 154

और इस काम के लिए औलिया अल्लाह की क़ब्रें ख़ास नहीं, बल्कि मुश्रिक तक की क़ब्र की ज़ियारत की इजाज़त है और इसी लिए इमाम नसई और इब्ने माजा ने 'ज़ियारत मुश्रिक की क़ब्र की' का बाब बांधा है और इसके बाद वह नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का अपनी मां के लिए इस्तग़फ़ार की इजाज़त चाहने का वाक़िया लाए हैं और यह कि अल्लाह तआ़ला ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को अपनी मां के लिए मग़्फ़िरत की दुआ़ मांगने की इजाज़त नहीं दी, मगर क़ब्र की ज़ियारत की इजाज़त दे दी और क़ब्र पर पहुंच कर नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि क़ब्रों की ज़ियारत किया करो, क्योंकि वह मौत की याद दिलाती है। —नस्र : 286

साफ़ ज़ाहिर है कि इबरत (सबक़ हासिल करने) के लिए गोरे ग़रीबां

(ग़ैर-आबाद जगह की क़ब्र) ही मुनासिब हो सकती है, न कि संगमरमर की तराशी हुई इमारतें, जहां फूलों की बारिश हो रही हो और जहां की हवाएं खुशबुओं से बोझल हों। नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने क़ब्रों के बारे में इर्शाद फ़रमाया कि—

क़ब्रें पक्की न बनाई जाएं

عَنْ جَابِرٍ ؓ قَالَ نَهٰى رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ اَنْ يُجَصَّصَ الْقَبْرُ وَ اَنْ يُّبْنٰى
عَلَيْهِ وَاَنْ يُّقْعَدَ عَلَيْهِ (رواه مسلم: مشكوٰة:١٤٨)

हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु रिवायत करते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने क़ब्र को पक्की बनाने से मना फ़रमाया है और इससे भी कि क़ब्र के ऊपर कोई इमारत बनाई जाए या क़ब्र पर बैठा जाए। —मुस्लिम

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने क़ब्रों को पक्की बनाने से मना फ़रमाया और इससे भी कि क़ब्र के ऊपर कोई इमारत बनाई जाए या क़ब्र पर बैठा जाए। —मुस्लिम

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने क़ब्रों को बुलन्द करने से भी मना फ़रमाया है और हुक्म दिया है कि क़ब्रें ज़मीन के बराबर होनी चाहिएं।

क़ब्रें ज़मीन के बराबर हों

عَنْ ثُمَامَةَ بن شفيؒ قَالَ كنا مع فضالة بن عبيد ؓ بارض روم
برودس فتُوُفِّي صاحب لنا فامر فضالة بقبره فسوّى ثم قال
سمعت رسول الله ﷺ يامر بتسويتها (مسلم)

हज़रत सुमामा बिन शफ़ी रहमतुल्लाह अलैहि रिवायत करते हैं कि हम लोग फ़ुज़ाला बिन उबैद रज़ियल्लाहु अन्हु के साथ रूम प्रदेश के द्वीप रोदिस (RHODES) में थे कि हमारे एक साथी का देहान्त हो गया। फ़ुज़ाला रज़ियल्लाहु अन्हु ने हमको आदेश दिया कि हम उनकी क़ब्र को बराबर कर दें, फिर फ़रमाया कि मैंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को ऐसा ही आदेश

देते हुए सुना है। —मुस्लिम : 35 मिस्री

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को ऊंची क़ब्रें और उन पर बनी हुई इमारतें इतनी ना पसन्द थीं कि आपने हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु को इस काम के लिए मुख्य रूप से भेजा कि वह उनकी ऊंचाई को मिटा दें।

ऊंची क़ब्र बराबर कर दी जाए

عَنْ اَبِی الْهَیَّاجِ الاسدیّ قال، قال لی علیّ ﷺ اَلَا اَبْعَثُكَ عَلٰی مَابَعَثَنِی عَلَیْهِ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ اَنْ لَاتَدَعَ تِمْثَالًا اِلَّا طَمَسْتَهُ وَلَاقَبْرًا مُشْرِفًا اِلَّا سَوَّیْتَهُ (رواه مسلم)

अबुल बयाज असदी रहमतुल्लाह अलैहि रिवायत करते हैं कि हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने मुझसे कहा कि ऐ अबुल बयाज! क्या मैं तुमको उस काम के लिए न भेजूं, जिस काम के लिए मुझे अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने भेजा था और वह काम यह है कि जो तस्वीर तुमको नज़र आए, उसको मिटा दो और जो क़ब्र ऊंची मिले, उसे बराबर कर दो। —मिश्कात : 148, मुस्लिम

इमाम शाफ़ई रहमतुल्लाहि अलैहि अपनी किताब 'अल-उम्म' में लिखते हैं कि मक्का मुकर्रमा के उलेमा क़ब्रों पर बनी हुई इमारतों को गिरा देने का हुक्म देते थे। —शरह मुस्लिम : नववी,भाग7:30, मिस्री एडीशन

गुंबदे ख़ज़रा की तारीख़

यह हदीस सुनने के बाद कुछ ज़ेहनों में सवाल उठता है कि अगर इस हदीस का यही मंशा है तो स्वयं नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की क़ब्र पर यह कुब्बा 'गुम्बदे ख़ज़रा' कैसे वजूद में आया? तो इसका जवाब यह है कि लगभग सात सौ साल तक नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की क़ब्र पर कोई इमारत नहीं थी, फिर 678 हि० में मंसूर बिन क़लादून सालेही (मिस्र का बादशाह) ने कमाल अहमद बिन बुरहान अब्दुल क़वी के मश्विरे से लकड़ी का एक जंगला बनवाया

और उसे हुजरे की छत पर लगवा दिया और उसका नाम 'कुब्बा रज़्ज़ाक' पड़ गया। उस वक़्त के उलेमा, हर चंद कि उस इक़्तिदार वाले को न रोक सके, मगर उन्होंने इस काम को बहुत बुरा समझा और जब यह मश्विरा देने वाला कमाल अहमद हटाया गया, तो लोगो ने उसके हटाए जाने को अल्लाह की ओर से उसके इस काम का बदला समझा। फिर अल-मलिक अन्नासिर हसन बिन मुहम्मद क़लादून ने और उसके बाद सन् 965 हि० में अल-मलिक, अल-अशरफ़, शाबान बिन हुसैन बिन मुहम्मद ने उसमें तामीरी इज़ाफ़े किए, यहां तक की मौजूदा तामीर अमल में आई। (वफ़ा उल वफ़ा : समहूदी, भाग-1, पृ-435:36)

मुनासिब है कि इस बारे में फ़ुक़हा (धर्मशास्त्रियों) की राय भी नक़ल कर दी जाए। हनफ़ी मसलक (राय) के सबसे भरोसे के फ़क़ीह (धर्मशास्त्री) अल्लामा शामी लिखते हैं, 'मेरी नज़र में कोई ऐसा आदमी नहीं है जिसने क़ब्र पर इमारत बनाने को जायज़ किया हो' फिर इमाम अबू हनीफ़ा रहमतुल्लाह अलैहि का फ़त्वा बयान करते हैं, 'उन्होंने क़ब्र पर कोई इमारत, जैसे घर, क़ुब्बा वग़ैरह बनाने को मना किया है, क्योंकि हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु की रिवायेत में नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इससे मना किया है कि क़ब्र को पक्की बनाई जाए, उस पर कतबा लगाया जाए या उस पर इमारत बनाई जाए। —शामी, भाग 1-839, स्तंबोल

क़ब्रों की ज़ियारत (दर्शन) की इजाज़त की ग़रज़

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जब क़ब्रों पर जाने की इजाज़त दी, उस समय यह भी बता दिया कि क़ब्रों पर कुछ लेने की ग़रज़ से न जाओ, बल्कि कुछ देने के लिए जाओ और देना यह है कि क़ब्र वालों के हक़ में दुआ करो कि अल्लाह तआला उनको अज़ाब से सलामती में रखे और उनके और तुम्हारे अपने गुनाह माफ़ कर दे, नबी सल्ल० ने क़ब्रों के लिए यह दुआ लिखाई है —

اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ يَااَهْلَ الْقُبُوْرِ يَغْفِرُ اللهُ لَنَا وَلَكُمْ اَنْتُمْ سَلَفُنَا وَنَحْنُ بِالْاَثَرِ (ترمذی)

माफ़ फ़रमाये और तुम्हें भी। तुम हमसे पहले जा चुके हो और हम तुम्हारे बाद आने वाले हैं।'

—तिर्मिज़ी

बिल्कुल यही मामला नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के आदेशानुसार हम अपने हर मरने वाले के साथ करतें हैं, चाहे वह एक सामान्य गुनाहगार (पापी) मुसलमान हो और चाहे वह ख़ुदा को पहुंचा हुआ वली, उसका जनाज़ा हमारे सामने होता है और लाइन बांधे दुआ़ कर रहे होते हैं कि—

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِحَيِّنَا وَمَيِّتِنَا وَشَاهِدِنَا وَغَائِبِنَا وَصَغِيْرِنَا وَكَبِيْرِنَا

وَذَكَرِنَا وَاُنْثٰنَا......الخ (ابو داؤد، نسائی، ترمذی)

'ऐ अल्लाह! माफ़ फ़रमा दे हमारे ज़िंदों को और हमारे मुर्दों को, हमारे हाज़िर लोगों को और हमारे ग़ायब लोगों को, हमारे छोटों को और हमारे बड़ों को, हमारे मर्दों को और हमारी औरतों को।

—अबू दाऊद, नसई, तिर्मिज़ी वग़ैरह, मिश्कात : 146

आख़िर यह कैसे मुम्किन है कि ज़मीन के बाहर तो हम अपने मरने वालों के लिए दुआ़ कर रहे हों, मगर जब वे ज़मीन के अंदर उतर जाएं तो हमारी ज़रूरत पूरी करने वाले और मुश्किल दूर करने वाले बन जाएं।

वज्हें बताते हैं

लोगों को जब समझाया जाता है कि जिसको तुम अल्लाह का वली समझते हो, उसकी क़ब्र के पास पहुंच कर इतने डरे हुए और बदहवास क्यों हो जाते हो कि कभी क़ब्र के पास झुके जाते हो, कभी क़ब्र को हाथ लगाकर उसकी ख़ाक बदन पर मलते हो, कभी उसका तवाफ़ करते हो, कभी हाथ बांधे उसके पास अपनी विपदाएं बयान कर रहे होते हो, कभी क़ब्र वाले की दुहाई देते हो, कभी नज़्र व नियाज़ पर उतर आते हो, कभी मन्नतें मानते हो कि औलाद हो जाए तो यह नज़्र करूंगा, बीमारी चली जाए तो यह ख़िदमत बजा लाऊंगा, वापस होने लगते हो, तो उलटे पैरों चलते हो कि क़ब्र की तरफ़ पीठ न होने पाए। क़ब्र के क़रीब या दूर जहां से भी गुज़रो, क़ब्र का रुख़ करके सलाम करते रहो और इसमें

बरकत जानते रहो और ऐसा न करने पर सख़्त मुश्किल में पड़ जाने का धड़का तुम्हें लगा रहे, औलाद हो तो नहला- धुला कर लाते हो और फ़र्श पर डाल देते हो, दूल्हा को निकाह के वास्ते लिए जा रहे होते हो, तो पहले क़ब्र पर हाज़िरी देते हो, आख़िर यह सब क्यों करते हो? क्या यह ग़ैर-अल्लाह की परस्तिश और पूजा नहीं है? और क्या अल्लाह के किसी एक वली ने भी इस बात का आदेश दिया है? अल्लाह के वली तो नमाज़ें पढ़ने वाले, रोज़े रखने वाले, अल्लाह से डरने वाले और अल्लाह ही को पुकारने वाले होते हैं, वे यह बात कैसे पसन्द कर सकते थे कि तुम यह काम करने के बजाए उनको पुकारो, उनसे मांगो, उनकी तो अल्लाह तआला ने यह शान बयान की है।

अल्लाह के वली कौन हैं?

اَلَا اِنَّ اَوْلِيَاءَ اللّٰهِ لَاخَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَاهُمْ يَحْزَنُوْنَ○ اَلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَكَانُوْا يَتَّقُوْنَ○ (يونس:٩٣)

'सुनो, जो अल्लाह के वली हैं, उनके लिए किसी ख़ौफ़ और रंज का मौक़ा नहीं, जिन्होंने ईमान अख़्तियार किया और जो अल्लाह से डरने वाले थे'

इस आयत से यह कहां निकलता है कि अल्लाह के वली मुर्दों को ज़िंदा कर देते हैं।

अल्लाह के वली के दुश्मन कौन हैं?

अल्लाह के वली के दुश्मन वे नहीं, जो उनकी सही पैरवी करते हैं, उनके क़दम के निशानों को निगाह में रखते हुए चलते हैं, उनको उनका असली मक़ाम देते हैं, बल्कि उनके दुश्मन वे हैं जो उनकी क़ब्रों को पक्की करते हैं,उन पर क़ुब्बे बना कर उर्स,मेले, भजन और क़व्वालियां शुरू कर देते हैं, मुश्किल में उनको पुकारते हैं और उनकी नज़्र व नियाज़ करके उनको ख़ुदा में शरीक ठहराते हैं, अल्लाह तआला ने अपनी किताब में खोल-खोल कर अल्लाह के वलियों के दुश्मनों का पता बतलाया है—

وَمَنْ اَضَلُّ مِمَّنْ يَّدْعُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَنْ لَّا يَسْتَجِيْبُ لَهٗ اِلٰى يَوْمِ الْقِيَامَةِ وَهُمْ عَنْ دُعَائِهِمْ غٰفِلُوْنَ، وَاِذَا حُشِرَ النَّاسُ كَانُوْا لَهُمْ اَعْدَآءً وَّكَانُوْا بِعِبَادَتِهِمْ كٰفِرِيْنَ (احقاف:٥-٦)

'उस आदमी से ज़्यादा गुराह और कौन है जो अल्लाह के अलावा दूसरों को आवाज़ दे, हालांकि वे क़ियामत तक उसकी पुकार का जवाब नहीं दे सकते, वे तो उनकी पुकार ही से ग़ाफ़िल हैं, हां, क़ियामत के दिन, जब सब लोग जमा किए जाएंगे(और अल्लाह के इन वलियों को अपने पुजारियों की हरकतों से बा-ख़बर किया जाएगा) तो ये (अल्लाह के वली) उनके (अपने पुजारियों के) दुश्मन बन जाएंगे और उनकी पूजा-पाठ का शिद्दत के साथ इंकार कर देंगे'।

— सूरः अहक़ाफ़ 5-6

मालूम हुआ कि अल्लाह के वलियों के असली दुश्मन वे लोग हैं जो उनको ख़ुदाई में शरीक ठहरा कर उनकी क़ब्रों पर चादरें चढ़ाते हैं और उनका प्रसाद खाते हैं। अल्लाह तआला ने हदीसे क़ुदसी में इर्शाद फ़रमाया है कि मैं अपने वली के दुश्मन से लड़ाई का एलान करता हूं। 'जिसने मेरे वली से दुश्मनी की, उससे मैं लड़ाई का एलान करता हूं।

—बुख़ारी

जब मामला यह है तो चाहिए कि अल्लाह तआला से डरा जाए और औलिया अल्लाह से दुश्मनी करना छोड़ दिया जाए। अजीब बात है कि जब इन ना समझों से कहा जाता है कि तुम्हीं बताओ कि क्या कोई ईमानदार और अल्लाह से डरने वाला इन बातों का हुक्म दे सकता है जो तुम आज करते हो, तो जवाब मिलता है कि हम यह सब कुछ इसलिए करते हैं कि हम गुनाहगार लोग हैं, हमारी पहुंच अल्लाह के दरबार तक कहां और वे ख़ुदा को पहुंचे हुए बुज़ुर्ग थे, हम इनको ख़ुश करके अल्लाह के यहां अपना वसीला बनाते हैं, ताकि ये हमारी बात वहां तक पहुंचा दें, आख़िर दुनिया में बादशाह तक पहुंचना होता है, तो क्या दरबारियों और वज़ीरों को वसीला नहीं बनाया जाता? यह बिल्कुल वही बात है जो अरब के लोग उस वक़्त किया करते थे। जब उनको टोका जाता था कि एक मालिक को छोड़ कर तुम दूसरों के पास क्यों जाते हो? अल्लाह तआला क़ुरआन में उनका नक़्शा यों पेश करता है—

ग़लत वजह बताना

وَالَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِهٖ اَوْلِيَآءَ مَانَعْبُدُهُمْ اِلَّا لِيُقَرِّبُوْنَا اِلَى اللّٰهِ زُلْفٰى ط (زمر:٣)

'रहे वे लोग जिन्होंने इसके सिवा दूसरे सरपरस्त बना रखे हैं। (वे अपने इस काम की वजह यह बताते हैं कि) हम तो उनकी इबादत सिर्फ़ इसलिए करते हैं कि वे अल्लाह तक हमारी पहुंच करा दें और कभी यों कहते हैं,' ये अल्लाह के पास हमारे सिफ़ारशी हैं।' (सूरः यूनुस 18)

सच है दुनिया भर के लोग हमेशा से यही कहते आए हैं कि हम दूसरी हस्तियों की इबादत उनको पैदा करने वाला समझ कर नहीं करते। पैदा करने वाला तो हम अल्लाह ही को मानते हैं और असल माबूद उसी को समझते हैं, लेकिन उसकी बारगाह बहुत ऊंची है, वहां तक हमारी पहुंच भला कहां, इसलिए हम इन बुज़ुर्गों को वसीला बनाते हैं, ताकि ये हमारी दुआएं और इल्तिजाएं उस तक पहुंचा दें और हमारे सिफ़ारशी बनें।

काश! उन्हें मालूम होता कि अल्लाह तआला का मामला दुनिया के बादशाहों से बिल्कुल अलग है। दुनिया के बादशाहों को तो सवाल करने वाले के हालात और ज़रूरतों का कुछ इल्म नहीं होता, मगर मालिक इस कमज़ोरी से पाक है, उसको इसकी ज़रूरत नहीं कि उसका कोई वज़ीर उस तक ख़बर पहुंचाए, तब उसे मालूम हो।

दुनिया के बादशाहों की तरह वह अपने सरदारों और वज़ीरों के झुरमुट में नहीं रहता कि जब तक कोई सरदार या वज़ीर उठ कर सिफ़ारिश न करे, वह किसी की अर्ज़दाश्त सुनने पर रज़ामंद ही न हो और न वह दुनिया के बादशाहों की तरह तुंद मिज़ाज और गुस्सावर है कि किसी सवाल करने वाले को अदब वाले ख़ादिमों का ज़रिया छोड़ कर सीधे-सीधे उसकी ख़िदमत में कुछ अर्ज़ करने का चारा न हो, इसीलिए अल्लाह तआला ने वज़ीर और बादशाह की ग़लत मिसालें बयान करने से क़ुरआन मजीद में मना फ़रमाया है और बतला दिया है कि मैं हर बात का इल्म भी रखता हूं और अपने बन्दों

के लिए अरहमुर्राहिमीन हूं, दूसरे ऐसे नहीं हैं–

فَلَا تَضْرِبُوْا لِلّٰهِ الْاَمْثَالَ، اِنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ وَاَنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ (نحل:٧٤)

'पस अल्लाह के लिए मिसालें मत गढ़ो, अल्लाह जानता है, तुम नहीं जानते।' —नह्ल : 74

हक़ीक़ी मालिक का तो हाल यह है कि वह इंसान से उसकी शहेरग से ज़्यादा क़रीब है–

وَلَقَدْ خَلَقْنَا الْاِنْسَانَ وَنَعْلَمُ مَا تُوَسْوِسُ بِهٖ نَفْسُهٗ وَنَحْنُ اَقْرَبُ اِلَيْهِ مِنْ حَبْلِ الْوَرِيْدِ (ق:١٦)

'हमने इंसान को बनाया है और हम जानते हैं जो बातें उसके जी में आती हैं और हम उससे उसके शहेरग से भी ज़्यादा क़रीब हैं।'—सूरः क़ाफ़ 16

यह है अल्लाह का मामला, रहे दूसरे तो उनको अपने पुकारने वालों की पुकार की ख़बर ही नहीं होती, पहुंचाना और सिफ़ारिश करना तो बाद की बात है, यह क़ुरआन करीम का असली मसला है और क़ुरआन ने औलिया अल्लाह को दुआएं पहुंचाने वाला समझने वालों को मुश्रिक कहा है। अबू जह्ल का सबसे मज़बूत अक़ीदा यही था।

पालनहार सीधे-सीधे दुआओं को सुनता है

यही अल्लाह के दरबार तक दुआओं के पहुंचाने का मस्अला नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सामने भी लाया गया था और कहा जा रहा था कि क्या हमारी बात सीधे- सीधे अल्लाह के दरबार तक पहुंच सकती है और क्या बिना वसीले के हमारी दुआएं सुनी जा सकती हैं। संसार के पालनहार ने क़ुरआन में इसका जवाब इर्शाद फ़रमाया–

وَاِذَا سَاَلَكَ عِبَادِیْ عَنِّیْ فَاِنِّیْ قَرِيْبٌ، اُجِيْبُ دَعْوَةَ الدَّاعِ اِذَا دَعَانِ فَلْيَسْتَجِيْبُوْا لِیْ وَلْيُؤْمِنُوْا بِیْ لَعَلَّهُمْ يَرْشُدُوْنَ (البقرہ:١٨٦)

'और ऐ नबी! मेरे बन्दे तुमसे मेरे बारे में मालूम करें तो उन्हें बता दो

कि मैं उनसे क़रीब ही हूं, पुकारने वाला जब मुझे पुकारता है, मैं उसकी पुकार को सुनता और जवाब देता हूं, इसलिए उन्हें चाहिए कि वे मेरा ही हुक्म मानें और मुझ ही पर ईमान लाएं, यह बात तुम उन्हें सुना दो, शायद कि वे सीधा रास्ता पा लें।'

—अल-बक़रः 186

ग़रज़ इस तरह से बता दिया गया है कि अगरचे तुम मुझे देख नहीं सकते, लेकिन यह ख़्याल न करो कि मैं तुमसे दूर हूं, नहीं, मैं अपने हर बन्दे से इतना क़रीब हूं कि जब वह चाहे, मुझसे अर्ज़- मारूज़ कर सकता है, यहां तक कि मन ही मन में वह जो कुछ मुझसे गुज़ारिश करता है, मैं उसे भी सुन लेता हूं और सिर्फ़ सुनता ही नहीं, बल्कि फ़ैसला भी सुना देता हूं और जिन बे-एतबार और बे-अख़्तियार हस्तियों को तुमने अपनी नादानी से हाजत पूरी करने वाला, मुश्किल दूर करने वाला और फ़रियाद सुनने वाला क़रार दे रखा है, उनके पास तो तुमको दौड़-दौड़ कर जाना पड़ता है, और फिर भी वे न तुम्हारी सुनवाई कर सकते हैं और न उनमें यह ताक़त है कि तुम्हारी दरख़्वास्तों पर फ़ैसला सुना सकें और मैं लम्बी-चौड़ी कायनात का अकेला फ़रमांरवा, तमाम अख़्तियारों और तमाम ताक़तों का मालिक, तुमसे इतना क़रीब हूं कि तुम बग़ैर किसी वास्ते और सिफ़ारिश के सीधे-सीधे हर वक़्त और हर जगह मुझ तक अपनी अर्ज़ियां पहुंचा सकते हो, इसलिए तुम अपनी इस नादानी को छोड़ दो कि एक-एक बे-अख़्तियार, बनावटी खुदा के दर पर मारे-मारे फिरते हो, मैं जो तुम्हें हुक्म दे रहा हूं, उसको मान लो और मेरी तरफ़ रुजू करो, मुझ पर भरोसा करो और मेरी बन्दगी और मरी इताअ़त करो। (उदधृत)

दुआ़ के लिए ज़िंदों को वसीला बनाना

बहुत से लोग क़ब्रों पर जाने की यह तावील करते हैं कि हम वहां मांगने के लिए नहीं जाते, बल्कि उन बुज़ुर्गों को अपने हक़ में दुआ़ करवाने जाते हैं, अब अगर उनसे कहा जाए कि अगर बुज़ुर्गों की दुआ़ओं को वसीला बनाया ही है तो उसका सही तरीक़ा यह है कि उनकी ज़िन्दगी में उनसे दुआ़ करवाओ, दुनिया से चले जाने के बाद यह बात सही नहीं है, तो तुरन्त शहीदों की ज़िन्दगी और उनकी रोज़ी का ज़िक्र कर दिया जाता है कि तुम उन बुज़ुर्गों को मुर्दा कहते

हो, हालांकि अल्लाह तआला क़ुरआन में शहीदों को ज़िंदा कहता है और उनको मुर्दा कहने से मना करता है।

सच्ची बात यह है कि क़ुरआन में शहीदों की ज़िन्दगी की जो आयतें आई हैं, वे इसलिए नहीं आई हैं कि शहीदों को वसीला बनाया जाए या उनको पुकारा जाए, बल्कि वे यह बताने आई हैं कि ईमान वालों का यह फ़र्ज़ है कि ईमान का बोल बाला करने के लिए अपने ख़ून की आख़िरी बूंद तक निछावर कर दें। बातिल के हाथ में हाथ देने के बजाए अपना सर देने पर तैयार रहें और अगर इस राह में उसका मालिक उसकी मेहनत क़ुबूल फ़रमा ले, तो वह यक़ीन रखे कि दुनिया की इस ज़िन्दगी से गुज़रने के तुरन्त बाद वह जन्नतों की ऐसी न मिटने वाली ज़िन्दगी का हक़दार बन जाएगा, जहां फिर मौत नहीं और क़ियामत से पहले ही यह जन्नतों की नेमतों से माला माल कर दिया जाएगा। यही बात है जो सूरः बक़रः में इस तरह ब्यान की गई है—

وَلَاتَقُوْلُوْا لِمَنْ يُّقْتَلُ فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ اَمْوَاتٌ بَلْ اَحْيَآءٌ وَّلٰكِنْ لَّايَشْعُرُوْنَ (بقره:١٥٤)

'और जो लोग अल्लाह की राह में शहीद किए जाएं, उनको मुर्दा न कहो, वे ज़िंदा हैं, लेकिन तुम्हें उनकी ज़िन्दगी का एहसास नहीं होता।' —बक़रः 154

ऊपर की आयत सूरः बक़रः की है, इसके बाद की आयतें जो उहुद की लड़ाई के बाद सूरः आले इमरान में उतरीं, साफ़ बताती हैं कि यह ज़िंदगी दुनिया में क़ब्रों के अन्दर 'ज़िन्दा दर गोर' क़िस्म की नहीं, बल्कि जन्नत में ऐश व आराम की ज़िंदगी है।

शहीद अल्लाह तआला के पास जन्नत में ज़िंदा हैं, क़ब्रों में नहीं

وَلَا تَحْسَبَنَّ الَّذِيْنَ قُتِلُوْا فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ اَمْوَاتًا، بَلْ اَحْيَآءٌ عِنْدَ رَبِّهِمْ يُرْزَقُوْنَ (آل عمران:١٦٩)

'जो लोग अल्लाह के रास्ते में क़त्ल हुए हैं, उनको मुर्दा न समझो, वे तो

हक़ीक़त में ज़िंदा हैं और अपने रब के पास रोज़ी पा रहे हैं।' –आले इम्रानः 169

इस तरह से साफ़ बता दिया गया शहीद 'अिन-द रब्बिहिम' (अपने रब के पास) हैं और वहां रोज़ी पा रहे हैं, इन क़ब्रों के अन्दर ज़िंदा नहीं, उनकी ज़िंदगी बरज़ख़ी है, दुन्यवी नहीं, अब ये सारी दलीलें अपने ख़िलाफ़ मौजूद पाने के बाद दूसरा रुख़ अख़्तियार किया जाता है और कहा जाता है कि चूंकि ये ज़िंदा हैं, इसलिए ये दुनिया में भी आते जाते रहते हैं, लेकिन अगर सही इल्म होता, तो शायद यह बात न कही जाती, क्योंकि हदीस में साफ़-साफ़ आ गया है कि जन्नत से न तो शहीदों की रूहें ही इस दुनिया में वापस आ सकती हैं और न खुद शहीद अपने जिस्म के साथ।

शहीद न तो रूहानी तौर पर और न जिस्मानी तौर पर इस दुनिया में आ सकते हैं

इमाम अहमद और अबू दाऊद की रिवायत है–

عَنْ اِبْنِ عَبَّاسٍ ؓ اَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ لِاَصْحَابِهِ اِنَّهٗ لَمَّا اُصِيْبَ اِخْوَانُكُمْ يَوْمَ اُحُدٍ جَعَلَ اللهُ اَرْوَاحَهُمْ فِيْ جَوْفِ طَيْرٍ خُضْرٍ تَرِدُ اَنْهَارَ الْجَنَّةِ، تَاْكُلُ مِنْ ثِمَارِ هَاوَتَاوِى اِلٰى قَنَادِيْلَ مِنْ ذَهَبٍ مُعَلَّقَةٍ فِيْ ظِلِّ الْعَرْشِ، فَلَمَّا وَجَدُوْا طِيْبَ مَاكِلِهِمْ وَمَشْرَبِهِمْ وَمَقِيْلِهِمْ قَالُوْا مَنْ يُّبَلِّغُ اِخْوَانَنَا عَنَّا اَنَّا اَحْيَآءٌ فِى الْجَنَّةِ لِئَلَّا يُزْهِدُوْا فِى الْجَنَّةِ وَلَايَنْكُلُوْا عِنْدَ الْحَرْبِ فَقَالَ اللهُ تَعَالٰى اَنَا اُبَلِّغُهُمْ عَنْكُمْ فَاَنْزَلَ اللهُ تَعَالٰى وَلَاتَحْسَبَنَّ الَّذِيْنَ قُتِلُوْا فِىْ سَبِيْلِ اللهِ اَمْوَاتًاط بَلْ اَحْيَاءٌ عِنْدَ رَبِّهِمْ يُرْزَقُوْنَ...الآية

(رواه ابوداؤد، مشكوٰة:٣٣٥)

'हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु रिवायत करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने साथियों से कहा कि जब तुम्हारे भाई उहुद के दिन शहीद हुए तो अल्लाह ने उनकी रूहों को उड़ने वाले

हरे क़ालिबों (दिलों) में डाल दिया और उन्होंने जन्नत की नहरों पर आना-जाना शुरू कर दिया। जब इस तरह उन्होंने खाने-पीने और आराम करने की आसाइशें मुहय्या पाईं तो आपस में कहा कि कौन (दुनिया में) हमारे भाइयों तक हमारे बारे में यह बात पहुंचाएगा कि हम जन्नत में ज़िंदा हैं, ताकि वे जन्नत से बे-रग़बती न बरतें और जिहाद के वक़्त कम हिम्मती न दिखाएं, पस अल्लाह तआला ने इर्शाद फ़रमाया कि मैं तुम्हारे बारे में यह बात पहुंचा दूंगा। फिर मालिक ने (सूरः आले इमरान की) ये आयतें उतारीं कि जो लोग अल्लाह की राह में क़त्ल हुए हैं, उनको मुर्दा न समझो, वे हक़ीक़त में ज़िंदा हैं और अपने रब के पास रोज़ी पा रहे हैं।

इस हदीस के लफ़्ज़ साफ़ बता रहे हैं कि शहीद लोग जन्नत में ज़िंदा हैं और यह भी कि वे दुनिया में वापस नहीं आ सकते, न तो रूहानी तौर पर और न जिस्मानी तौर पर, वरना आकर अपना हाल बता देते और अल्लाह तआला को उनके बारे में आयतें न उतारनी पड़तीं। असल में रूहों के दुनिया में आने-जाने के क़िस्से, सिर्फ़ शिर्क भरे अफ़साने हैं। इब्ने कसीर ने अपनी तफ़्सीर में क़ुरआन की इस आयत के बाद लिखा है–

يُخْبِرُ تَعَالٰى عَنِ الشُّهَدَآءِ بِاَنَّهُمْ وَاِنْ قُتِلُوْا فِىْ هٰذِهِ الدَّارِ فَاِنَّ اَرْوَاحَهُمْ حَيَّةٌ مَرْزُوْقَةٌ فِىْ دَارِ الْقَرَارِ

'अल्लाह तआला शहीदों के बारे में ख़बर दे रहा है कि हर चंद कि वे इस दुनिया में शहीद किए गए हैं, मगर उनकी रूहें दारुल क़रार (जन्नत) में ज़िंदा हैं और उन्हें रोज़ी मिलती है।'

यही बात इमाम मुस्लिम अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु से और वह नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से रिवायत करते हैं कि शहीदों की रूहें जन्नत में सब्ज़ उड़ने वाले क़ालिबों में हैं। इस तरह क़ुरआन और हदीस के मुताबिक़ साफ़ मालूम हो गया कि शहीदों की रूहें इन क़ब्रों में अपने जिस्मों के अन्दर नहीं हैं और न उनसे किसी क़िस्म का ताल्लुक़ ही बाक़ी रहा है, वरना एक रूह के बजाए कम से कम दो रूहों का मानना ज़रूरी हो जाएगा, एक जो जन्नत में रहे और दूसरी क़ब्रों वाली, जिससे आज औलाद मांगी जाती है, दौलत तलब

की जाती है। आख़िर वह कौन-सी रूह है जो जन्नत की राहत छोड़कर क़ब्रों के अंधेरों में जाना या रहना पसन्द करेगी। इसी बात की ताईद जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु की हदीस से भी होती है कि मरने के बाद कोई दुनिया में फिर वापस नहीं जा सकता कि वहां जाकर ज़िंदा रहें।

عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِاللهِ قَالَ نَظَرَ اِلَیَّ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ ذَاتَ یَوْمٍ فَقَالَ یَاجَابِرُ مَالِیْ اَرَاكَ مُهِمًّا قُلْتُ یَارَسُوْلَ اللهِ اُسْتُشْهِدَ اَبِیْ وَتَرَكَ دَیْنًا وَّعَیَالًا، قَالَ فَقَالَ اَلَا اُخْبِرُكَ مَا كَلَّمَ اللهُ اَحَدًا قَطُّ اِلَّا مِنْ وَّرَاءِ حِجَابٍ، وَاِنَّهٗ كَلَّمَ اَبَاكَ كِفَاحًا قَالَ سَلْنِیْ اُعْطِكَ قَالَ اَسْئَلُكَ اَنْ اُرَدَّ اِلَی الدُّنْیَا فَاُقْتَلَ فِیْكَ ثَانِیَةً فَقَالَ الرَّبُّ عَزَّوَجَلَّ اِنَّهٗ قَدْ سَبَقَ مِنِّی الْقَوْلُ اَنَّهُمْ اِلَیْهَا لَایُرْجَعُوْنَ (رواہ الترمذی والبیهقی)

हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु रिवायत करते हैं कि एक दिन अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मेरी तरफ़ देखा और फ़रमाया कि क्या बात है, मैं तुमको ग़मगीन पा रहा हूं। हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि मैंने जवाब में अर्ज़ किया कि वालिद (उहुद की लड़ाई में) शहीद हो गए और उन पर क़र्ज़ बाक़ी है और कुंबा बड़ा है। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि जाबिर! क्या मैं तुमको वह बात न बताऊं कि अल्लाह तआला ने किसी से भी बग़ैर पर्दे के बात नहीं की, मगर तुम्हारे बाप से आमने-सामने होकर कहा कि अब्दुल्लाह मांगो, तुमको दूंगा, तुम्हारे बाप ने कहा कि मालिक! मुझे फिर दुनिया में लौटा दो, ताकि मैं दूसरी बार तेरी राह में क़त्ल किया जाऊं, इस पर मालिक अज़्ज़ व जल्ल ने इर्शाद फ़रमाया कि मेरी तरफ़ से यह बात कही जा चुकी है कि लोग दुनिया से चले आने के बाद फिर उसकी तरफ़ वापस न जा सकेंगे।

—तिर्मिज़ी, बैहक़ी

साफ़ मालूम हो गया कि मरने वाला चाहे नबी हो, चाहे शहीद, दुनिया

में वापस नहीं आ सकता। जिसकी भी वफ़ात हो गई, उसकी दुनिया की ज़िंदगी ख़त्म हो गई, अब वह क़ियामत तक बरज़ख़ी ज़िंदगी गुज़ारेगा। यह दुनिया से रवानगी जिसको मौत के नाम से पुकारा जाता है, हर फ़र्द व बशर के लिए मुक़द्दर है। नबी सल्ल० की वफ़ात पर जब कुछ लोगों को यह ख़्याल हुआ कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर मौत नहीं तारी हो सकती (यानी मौत नहीं आ सकती) तो अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु ने तक़रीर फ़रमाई और कहा कि—

اَلَا مَنْ كَانَ يَعْبُدُ مُحَمَّدًا فَاِنَّ مُحَمَّدًا ﷺ قَدْمَاتَ وَمَنْ كَانَ يَعْبُدُ اللهَ فَاِنَّ اللهَ حَيٌّ لَايَمُوْتُ وَقَالَ اِنَّكَ مَيِّتٌ وَّاِنَّهُمْ مَيِّتُوْنَ الخ (الزمر:٣٠) وَمَا مُحَمَّدٌ اِلَّا رَسُوْلٌ قَدْخَلَتْ مِنْ قَبْلِهِ الرُّسُلُ ط اَفَائِنْ مَّاتَ اَوْ قُتِلَ انْقَلَبْتُمْ عَلٰى اَعْقَابِكُمْ ط الى...... الشَّاكِرِيْنَ

(آل عمران:١٤٤)

सुन लो कि जो मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को पूजता था, तो मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को तो मौत आ गई और जो अल्लाह का पुजारी था, उसे मालूम हो कि अल्लाह हमेशा से ज़िंदा है और हमेशा रहेगा, उसे मौत नहीं। फिर अबूबक्र सिद्दीक़ ने क़ुरआन की ये दो आयतें पढ़ीं—

1. ऐ मुहम्मद! तुमको भी मौत आनी है और ये लोग भी मर कर रहेंगे।

—ज़ुमरः 30

2. मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इसके सिवा कुछ नहीं कि बस एक रसूल हैं, इनसे पहले भी बहुत से रसूल गुज़र गए हैं, पस क्या यह अगर मर जाएं या शहीद कर दिए जाएं तो तुम उलटे पैरों फिर जाओगे?

—आले इमरान 144, बुख़ारी 510

हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु के इस ख़ुत्बे का यह असर हुआ कि सारे सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम को नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मौत का यक़ीन आ गया और उनकी ज़बान पर ये आयतें जारी हो गईं। नबी सल्लल्लाहु

अलैहि व सल्लम की वफ़ात का मस्‌अला ऐसा शानदार मस्‌अला था कि अल्लाह ने दुनिया के दो सबसे बड़े वलियों के ज़रिए उस पर 'इज्माअ्' (एक राय) करवा दिया। कोई दूसरा मस्‌अला ऐसा नहीं है, जिस पर ऐसा इज्माअ् हुआ हो और वजह भी ज़ाहिर है कि मरने के बाद की ज़िंदगी ही ऐसा अक़ीदा है, जो शिर्क की असली जड़ है। इसी तरह हदीस की किताबों में बे-हिसाब सहाबा और सहाबियात रज़ियल्लाहु अन्हुम से नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मौत की तस्दीक़ इन लफ़्ज़ों में मौजूद है 'मर गए', 'रूह क़ब्ज़ कर ली गई', 'दुनिया से चले गए', वग़ैरह, मगर किसी किताब में किसी सहाबी रज़ियल्लाहु अन्हु से मौत के बाद ज़िंदा होना नक़ल नहीं किया गया है और न किसी हदीस के माहिर ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की वफ़ात के बाद 'हयातुन्नबी बा-द वफ़ातिही' (नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की वफ़ात के बाद उनकी ज़िंदगी) का बाब ही मुक़र्रर किया है।

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का ख़्वाब में आना

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को दुनिया में ज़िंदा साबित करने और उन्हें इल्म व तसर्रुफ़ में शरीक ठहराने के लिए यह भी कहा जाता है कि उन्होंने फ़्लां को ख़्वाब में आकर यह बतला दिया और फ़्लां को यह बतला दिया, और इसके सुबूत में बुख़ारी व मुस्लिम की सहीह रिवायतों से ग़लत दलील लाई जाती है, जैसे इमाम बुख़ारी ने सहीह बुख़ारी में यह बाब बांधा है बाब मन राअन्नबी-य सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फ़िल मनाम (बाब, जिसने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को ख़्वाब में देखा) फिर सबसे पहले यह रिवायत लाए हैं—

انّ اباهريرة قال سمعت النبی ﷺ يقول من رانی فی المنام
فسيرانی فی اليقظة ولايتمثل الشيطان بی قال ابوعبدالله قال
ابن سيرين اذا راٰه علی صورته (بخاری:١٠٣٥)

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० कहते हैं कि मैंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व

सल्लम को कहते हुए सुना है कि जिसने मुझे ख़्वाब में देखा, वह बहुत जल्द मुझे जागते में देखेगा और शैतान मेरी शक्ल अख़्तियार नहीं कर सकता। अबू अब्दुल्लाह (इमाम बुख़ारी) कहते हैं कि इब्ने सीरीन ने कहा, 'जब कोई नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को उनकी अपनी सूरत पर देखे।'–बुख़ारी : 1035

हदीस के लफ़्ज़ों में ' मन रा-अ ' यानी 'जिसने मुझे देखा' साफ़ बतला रहा है कि यहां वे लोग मुराद हैं, जिन्होंने ज़िंदगी में नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को उनकी असली शक्ल में देखा था, शिमाइल की किताबों में सरापा पढ़ लेने वाले नहीं। दूसरी बात इस हदीस में यह है कि शैतान मेरी शक्ल व सूरत नहीं अख़्तियार कर सकता। यह नहीं कहा गया कि मुझे ज़िंदगी में न देखने वालों को वह ख़्वाब के ज़रिए (धोखे) में नहीं डाल सकता और किसी दूसरी शक्ल के ज़रिए नहीं कहलवा सकता कि मैं तुम्हारा नबी मुहम्मद हूं ताकि वह आदमी जिसने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को नहीं देखा है, उसके फ़रेब में आ जाए। अब इस माक़ूल बात से गुरेज़ के लिए दूसरी बात कही जाने लगी है कि अगर ख़्वाब में आने वाली यह शक्ल क़ुरआन व हदीस के मुताबिक़ कहे तो वह नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ही की शक्ल है, क्योंकि शैतान हक़ बात नहीं बता सकता, यह बात भी सही नहीं है, क्योंकि बुख़ारी रहमतुल्लाह अलैहि की रिवायत में आता है कि अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु को शैतान ने आयतुल कुर्सी की सहीह फ़ज़ीलत बतलाई थी और नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उसकी बात की इन लफ़्ज़ों में तस्दीक़ की थी– 'अ मा अन्नहू स-द-क़-क व हु-व कज़ूब' यानी हक़ीक़त यह है कि उसने तुमको सच्ची बात बतलाई, जबकि वह बड़ा झूठा है। मालूम हुआ कि शैतान सच्ची बात भी बतला सकता है।

असल में यह ख़्वाब का मामला एक कारोबार की हैसियत अख़्तियार कर चुका है। बहुत से लोग नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ख़्वाब का क़िस्सा सुना-सुनाकर अपनी फ़ज़ीलत और बुज़ुर्गी ज़ाहिर करना चाहते हैं और झूठे ख़्वाब बयान करने वाले के बारे में नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की धमकी से बे-परवाह नज़र आते हैं। कुछ दूसरे इसे ऐतक़ाद के कमज़ोर लोगों के माल को हथियाने का ज़रिया बनाते हैं और उनसे कहते हैं कि नबी

सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तश्रीफ़ लाए थे और इर्शाद फ़रमाया था कि मेरे फ़्लां आशिक़े सादिक़ के पास चले जाओ, वह तुम्हारी ज़रूरत पूरी कर देगा। इसी तरह कभी किसी के बारे में यह ख़्याल ज़ाहिर कर दिया जाता है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ख़्वाब में आकर यह बताया है कि 'वह' इस वक़्त उम्मत का सबसे बड़ा आलिम या सबसे बड़ा वली है और यह भूल जाता है कि इन बातों पर यक़ीन लाने से वह अल्लाह तआ़ला के लिए हय्य (ज़िंदा) व क़य्यूम होने और गा़यबाना तसर्रुफ़ात का अख़्तियार रखने में नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को शरीक ठहराता है और उनके बारे में यह अक़ीदा रखता है कि वह दुनिया में ज़िंदा हैं और उम्मत के हाल को जानते ही नहीं, बल्कि ख़्वाब में आ-आकर लोगों को उससे बा-ख़बर भी करते रहते हैं, हालांकि यह बात अल्लाह की किताब के बिल्कुल ख़िलाफ़ और उसकी सिफ़ात, इल्म व तसर्रुफ़ में खुला शिर्क है, इसी तरह इब्राहीम अलैहिस्सलाम का किसी के ख़्वाब में आकर उसे मज्मा के सामने तक़रीर करने का हुक्म देना और उस तक़रीर की तारीफ़ व तहसीन करना, फिर उस ख़्वाब को ख़्वाब देखने वाले की फ़ज़ीलत और बुज़ुर्गी का सबूत ठहराना भी इसी क़बील से है, अआ़ज़नल्लाहु०

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को हयात, इल्म और तसर्रुफ़ में अल्लाह का शरीक ठहराने के लिए यह जो 'ख़्वाब' का खेल खेला गया है, उसे अब बन्द होना चाहिए। अल्लाह फ़रमाता है—

يَوْمَ يَجْمَعُ اللّٰهُ الرُّسُلَ فَيَقُوْلُ مَاذَآ اُجِبْتُمْ قَالُوْا لَاعِلْمَ لَنَا، اِنَّكَ اَنْتَ عَلَّامُ الْغُيُوْبِ (مائدہ:۲۹)

'क़ियामत के दिन अल्लाह तआ़ला सारे पैग़म्बरों को जमा करेगा और उनसे पूछेगा कि तुम्हारी उम्मत में कहां तक दावते इलाही का जवाब दिया गया। सारे पैग़म्बर कहेंगे कि हमें कुछ ख़बर नहीं (कि उन्होंने हमारे पीछे क्या कुछ किया) ग़ैब का इल्म तो रखने वाला सिर्फ़ तू है। —माइदा 29

क़ुरआन ने ईसा अलैहिस्सलाम का जवाब तफ़्सील के साथ नक़ल किया

है। यह क़ियामत के दिन कहेंगे—

وَكُنتُ عَلَيْهِمْ شَهِيدًا مَّادُمْتُ فِيهِمْ فَلَمَّا تَوَفَّيْتَنِي كُنتَ أَنتَ الرَّقِيبَ عَلَيْهِمْ (المائدہ:۱۱۷)

'और मैं जब तक उनमें ठहरा रहा, उनके हालात की निगरानी करता रहा, फिर जब तूने मुझे वफ़ात दे दी तो सिर्फ़ तू (ऐ मालिक!) उन पर निगरां बाक़ी रह गया।'

—माइदा 117

ईसा अलैहिस्सलाम इस तरह अपने 'आलिमुलग़ैब' और हाज़िर व नाज़िर होने की अपनी ज़ुबान से नफ़ी करेंगे। इसी तरह मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से बुख़ारी रहमतुल्लाह अलैहि ने कई हदीसें रिवायत की हैं कि मेरे उम्मती मेरी तरफ़ हौज़े कौसर पर आते-आते जहन्नम की तरफ़ ले जाए जाएंगे और मैं आवाज़ दूंगा कि हां, हां, ये मेरे उम्मती हैं। अल्लाह तआला की तरफ़ से जवाब दिया जाएगा,' तुम्हें क्या मालूम कि तुम्हारे बाद उन्होंने क्या-क्या बिदअ़तें ईजाद की थीं।

—बुख़ारी: 665

अगर नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को अपनी वफ़ात के बाद उम्मत के हालात की ख़बर होती तो वे उन लोगों के जहन्नम की तरफ़ जाने पर हरगिज़ ताज्जुब न करते और न अल्लाह तआला की तरफ़ से यह बात कही जाती कि 'तुम्हारे बाद उन्होंने बड़ी-बड़ी बिदअ़तें ईजाद की थीं, बुख़ारी ने यही साबित किया है।

मालू : हुआ कि अगर किसी का अक़ीदा यह हो कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम वफ़ात के बाद भी ज़िंदा हैं और उम्मत के हालात से बा-ख़बर भी और कुछ लोगों को इन हालात से आगाह भी करते रहते हैं, तो यह बात किताबे इलाही के सरासर ख़िलाफ़ और ज़िंदगी की सिफ़त, इल्म व तसर्रुफ़ में खुला शिर्क है। सुलतान नूरुद्दीन ज़ंगी का शीशे की दीवारों वाला मशहूर क़िस्सा भी इसी क़बील से है, बे-असल व बे-बुनियाद। रहीं बशारतें, तो जब वे हक़ साबित हो जाएं, तब यह कहा जा सकता है कि वे सच्चे थे, वरना 'अज़ग़ासु अहलाम' किसी का सपना देखकर यह कहना कि ऐसा होने वाला है या तो खुदाई का दावा है या नुबूवत का।

राई का परबत

खुदा को मालूम है कि लोगों ने जो नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ख़्वाब में आने की बे-हिसाब कहानियां गढ़ ली हैं, उनसे इनका मतलब क्या है, अगर कहना यह है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ख़्वाब देखने वाले के पास आ खड़े होते हैं तो इससे फ़ायदा? ख़्वाब देखने वाला तो सो रहा होता है और अगर दिमाग़ के अन्दर मुराद है, तो बहरहाल ख़्यालात में आना ही हो सकता है, हिस्सी और वजूदी आना तो नहीं। क्या कहने वाले यह कहना चाहते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को उम्मत के हालात का इल्म होता है और वह अपने उम्मती की ज़रूरतों और हाजतों से बा-ख़बर रहते हैं और जब भी जिसके लिए मुनासिब समझते हैं, अपनी क़ब्र से निकल कर उसके पास पहुंच जाते हैं और सोते में उसके दिमाग़ या ख़्यालात में दाख़िल होकर उसे जो कुछ बताना होता है, बता देते हैं और इतनी देर के लिए मदीना मुनव्वरा में क़ब्र खाली रह जाती है और अगर एक ही वक़्त में अलग-अलग मुल्कों के अलग-अलग लोग आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का ख़्वाब देखें तो एक ही वक़्त में आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हर जगह मौजूद होते हैं। क्या ख़ूब और फिर वह जिसने कभी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को हयात में न देखा हो, वह कैसे कह सकता है कि मैने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ही को देखा है। असल में यह जो रिवायत आई है, वह लोगों की दीनदारी के कारोबार को चमकाने के लिए नहीं आई है, बल्कि यह बताती है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की यह ख़ुसूसियत है कि शैतान आपका रूप नहीं अख़्तियार करता। जिस तरह हदीस में यह ख़ुसूसियत आई है कि हर आदमी के साथ शैतान लगा रहता है, लोगों ने मालूम किया कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ भी है। फ़रमाया कि हां, मेरे साथ भी है, मगर 'वला किन्नल्ला-ह अआ़ननी अलैहि फ़ असल-ल-म (मुस्लिम, मिश्कातः 18) यानी हां, मेरे साथ भी शैतान लगा हुआ है, मगर अल्लाह तआ़ला ने मेरी मदद की और वह शैतान मेरा ताबेदार बन गया।

—मिश्कात : 18

उसूली बहस

कुछ तेज़ क़िस्म के लोग इस हदीस के सिलसले में यह बात उठाते हैं कि 'मन रा-अ' (जिसने देखा) में 'मन' आम है, तुमने इससे सिर्फ़ सहाबा किराम कैसे ले लिया। काश! उनको कोई यह बताए कि अगर 'मन' को आप मानते हो, तो फिर अपने एतक़ाद के ख़िलाफ़ यह भी मानो कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को एक मुश्रिक और क़ादियानी भी ख़्वाब में देख सकता है। दूसरी बात उसूली है और वह यह कि 'मन' 'कुल' की तरह ख़ास भी होता है जैसे उसूले सरख़सी की इबारत साफ़ बताती है ' कलिमतु कुल्लिन, व हि-य तहमिलुल खुसू-स नह-व कलिमति 'मन' (कुल लफ़्ज़ ख़ास का भी हामिल होता है जैसे मन लफ़्ज़)

—उसूले सरख़सी 1-157, पृ० 18:19

रिवायतें, जो एतबार के क़ाबिल नहीं

अफ़सोस कि बात यहीं पर ख़त्म नहीं हो जाती, बल्कि अब गढ़ी हुई और एतबार के ना-क़ाबिल रिवायतों का एक सिलसिला शुरू हो जाता है। कहा जाता है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम क़ब्र में ज़िंदा हैं और रोज़ी भी मिलती है, उम्मत का सलात व सलाम उन तक पहुंचता है, सलात व सलाम ही नहीं उम्मत के आमाल भी उनके सामने पेश किए जाते हैं। काश, इन रिवायतों की हैसियत का लोगों को सही इल्म होता, मुनासिब है कि उन रिवायतों की असल हक़ीक़त वाज़ेह कर दी जाए।

क़ब्र में ज़िंदगी, खाना-पीना और नमाज़

अल्लाह तआला तो फ़रमाता है कि सबको मरना है और मरने के बाद सिर्फ़ क़ियामत के दिन ही उठना है—

'(दुनिया की ज़िंदगी) के बाद तुम्हें एक दिन ज़रूर मरना है और फिर क़ियामत के दिन ही उठाया जाना है।'

—अल मूमिनूनः 15-16

यह उसूल आम है, इसमें कोई छूट नहीं, लेकिन लोग दुनिया में क़ब्र की ज़िंदगी के सुबूत में झूठी रिवायतें लाते हैं। इब्ने माजा की रिवायत, 'फ़

नबीयुल्लाहि हय्युन फ़िल क़ब्रि बिरिज़्क़' (अल्लाह का नबी क़ब्र में ज़िंदा है और उसे रोज़ी दी जाती है।) पूरी सनद यों है—

حدثنا عمرو بن سواد المصری حدثنا عبداللہ بن وھب عن عمرو بن الحارث عن سعید بن ابی ھلال عن زید بن ایمن عن عبادۃ بن نسی عن ابی الدرداءؓ قال قال رسول اللہ ﷺ فنبی اللہ حیٌّ یرزق

(رواہ ابن ماجہ)

इस रिवायत में इरसाल है, क्योंकि ज़ैद बिन ऐमन का उबादा बिन नसी से सिमाअ़ नहीं है। रिवायत करने वाले सईद बिन अबी हिलाल को इब्ने हज़्न ने ज़ईफ़ कहा है। अबूबक्र बिन अज़ली सालिकी कहते हैं कि यह रिवायत साबित नहीं है। इमाम बुख़ारी रहमतुल्लाह अलैहि फ़रमाते हैं कि यह रिवायत मुर्सल है।

—तहज़ीबुत्तहज़ीब, भाग 3, पृ० 398, तारीख़े कबीर : बुख़ारी, भाग 2-1, पृ० 354

रही बैह्क़ी की रिवायत 'नबी अपनी क़ब्रों में ज़िंदा हैं और नमाज़ पढ़ते हैं, तो वह भी भरोसे से लायक़ नहीं है, क्योंकि उसका रिवायत करने वाला हसन बिन क़ुतैबा ख़ुज़ाई है, जिसको इमाम ज़हबी 'हु-व हालिक' (वह हलाक करने वाला!) कहते हैं। दारे क़ुत्नी उसे मतरूकुल हदीस, अबू हातिफ़ ज़ईफ़, बे-बुनियाद रिवायत करने वाला और अक़ीली ज़्यादा बहस करने वाला कहते हैं।

—मीज़ानुल एतदाल : 241,भाग 1, अस्क़लानी, लिसानुल मीज़ान में इब्ने हजर और अस्क़लानी, भाग 2, पृ० 246

अल्लामा इब्ने क़य्यिम ने 'अस्सवाइक़ुल मुरसला' में अपने नोनिया क़सीदा में इन रिवायतों के बारे में कहा है—

وحدیث ذکر حیاتھم بقبورھم لمّا یصح وظاھر النکران

'क़ब्र में नबियों की ज़िंदगी का जिस रिवायत में ज़िक्र हुआ है, वह सही नहीं है और उसका मुन्कर होना साफ़ ज़ाहिर है और अबूयाला की रिवायत, तो इसमें मुस्तलिम बिन सईद और हज्जाज बिन अस्वद दोनों ज़ईफ़ हैं।

मुस्तलिम बिन सईद

इब्ने हजर लिखते हैं कि 'रुबमा वहम' (यानी कभी-कभी वहम में मुब्तला हो जाता है, तक़रीब 488) शोबा कहते हैं कि मुझे यह ख़्याल भी न था कि इसको दो हदीसें भी याद हैं। —तहज़ीबुत्तहज़ीब, भाग 10, पृ० 104

हज्जाज बिन अस्वद

साबित बनानी से मुन्कर रिवायत नक़ल करते हैं यह लिख कर इब्ने हजर और अज़-ज़हबी ने यही रिवायत सबूत के तौर पर पेश की।

—लिसानुल मीज़ान, भाग 2, पृ० 175, मीज़ानुल एतदाल भाग 1, पृ० 214

मूसा अलैहिस्सलाम की क़ब्र में नमाज़

इसी तरह मुस्लिम की इस रिवायत से मुर्दों की क़ब्र में ज़िंदगी पर दलील लाई जाती है, जिसमें नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मेराज का वाक़िया बयान फ़रमाया है। लफ़्ज़ इस तरह हैं—

"مررتُ علی موسیٰ لیلة أسرىَ بی عند الكثیب الاحمر وهو قائم یصلی فی قبره"

'नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि मेराज की रात मूसा अलैहिस्सलाम की उस क़ब्र के पास से गुज़र हुआ जो लाल रंग के टीले के क़रीब है, वह अपनी क़ब्र में खड़े हुए नमाज़ पढ़ रहे थे।' —मुस्लिम

इस रिवायत में क़ब्र वालों के शैदाइयों ने 'क़ब्र में ज़िंदगी' के इस बोदे सहारे को दांतों से पकड़ लिया है, हालांकि उसी सहीह मुस्लिम की दूसरी रिवायत में है नबी मूसा अलैहिस्सलाम की क़ब्र के पास से गुज़र कर जब बैतुल मक़्दिस पहुंचे तो वहां हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम और हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को नमाज़ पढ़ते हुए देखा और बाद में उनकी इमामत करके उन्हें नमाज़ पढ़ाई, क़ब्र के इन परवानों की हर अदा निराली है, सिर्फ़ क़ब्र में ज़िंदा साबित करने ही से उनका काम चल गया, आख़िर बैतुल मक़्दिस में भी

रूह के बदन में वापस लौटाए जाने की ग़लत रिवायतें

1. बरा बिन आज़िब रज़ियल्लाहु अन्हु से निस्बत की गई रिवायत है कि हर मरने वाले की रूह सवाल व जवाब से पहले उसके जिस्म में लौटा दी जाती है, (अहमद, मिश्कात, पृ० 142) यह रिवायत भी ज़ईफ़ और एतबार के क़ाबिल नहीं। इस रिवायत में भी शीआ ज़ाज़ान है, जिसको सलमा बिन कुहैल अबुल बख़्तरी से भी कमतर समझते हैं और दूसरा उसका शागिर्द मिनहाल बिन अम्र है। अब्दुल्लाह कहते हैं कि मेरे वालिद अहमद बिन हंबल कहते थे कि अबू बशर मुझको मिनहाल से ज़्यादा भला लगता है और इस अबू बशर जाफ़र बिन अयास को शोबा ने ज़ईफ़ कहा है। इब्ने मुईन मिनहाल की शान गिराते थे। हाकिम ने कहा कि यह्या बिन क़त्तान उसको ज़ईफ़ कहते थे और अबू मुहम्मद बिन हज़्म भी उसको ज़ईफ़ कहते थे और उसकी इस बरा बिन आज़िब वाली रिवायत को रद्द करते थे।

—तहज़ीवुत्तहज़ीब, भाग 10, पृ० 319 - 320 व मीज़ानुल एतदाल, भाग 3, पृ० 204

मालूम हुआ कि मरने वाले के दुनिया वाले जिस्म में रूह का वापस लौटाया जाना ग़लत है, असल में मरने वाले के इस दुनिया और इससे मुताल्लिक़ चीज़ों से सारे रिश्ते टूट जाते हैं। यही बात क़ुरआन फ़रमाता है, 'अब अज़ाब व राहत के जो भी पल मरने वाले पर गुज़रते हैं, वह आलमे बरज़ख़ में गुज़रते हैं, इस दुनिया में नहीं। —अल-मोमिन 100

2. एक रिवायत में है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि जब कोई आदमी मुझ पर सलाम भेजता है तो अल्लाह तआला मेरी रूह वापस लौटा देता है और मैं सलाम का जवाब देता हूं। (अबूदाऊद, बैहक़ी, मिश्कात : 86) यह रिवायत भी क़ुरआन के ख़िलाफ़ और एतबार के नाक़ाबिल है। इस रिवायत में अबूसख़्र हुमैद बिन ज़ियाद हैं जिसको हातिम बिन इस्माईल सुयूती, नसई, इब्ने हम्माद और अहमद बिन हंबल ने ज़ईफ़ बताया है। (तहज़ीबुत्तहज़ीब, जिल्द 3, 41-42) दूसरा रिवायत करने वाला अबू सख़्र का उस्ताद यज़ीद बिन अब्दुल्लाह बिन कुसैत भी ज़ईफ़ है। इब्ने हब्बान कहते हैं कि 'कभी-कभी ख़ता करता है। इमाम मालिक कहते हैं कि ज़ईफ़ है। अबू हातिम कहते हैं, क़वी नहीं

है। (तहज़ीबुत्तहज़ीब, भाग 11, पृ० 342-343) इब्ने तैमिया कहते हैं, ज़ईफ़ भी है और अबू हुरैरह से उसका सुनना भी साबित नहीं है।

—अल-क़ौलुल बदीअ़, पृ० 156 और जलाउल इफ़्हाम : 22

इस जिरह के बाद इस रिवायत को रद्देरूह के लिए दलील बनाना किस क़दर ग़लत है। कहा जाता है कि दुनिया में हर वक़्त कोई न कोई नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर दरूद व सलाम पढ़ता है, इसलिए आप की रूह मुस्तक़िल जिस्म के अन्दर रहती है। क्या ख़ूब! गुज़र चुका है कि रूह एक बार निकलने के बाद सिर्फ़ क़ियामत के दिन ही लौटाई जाएगी।

मुर्दा बुज़ुर्गों को दुआ के लिए वसीला बनाने का शिर्क

इससे पहले बयान किया जा चुका है कि मुश्रिकों का सबसे बड़ा शिर्क यह था कि वह मुर्दों को अपना सिफ़ारिशी और दुआओं का वसीला बनाकर पूजते थे। अल्लाह तआ़ला ने उनको सख़्ती से डांटा और इस बुरे काम से मना किया, ऐ काश, कि क़ब्र वालों को दुआ के लिए वसीला बनाने वालों को यह भी ख़बर होती कि उमर बिन ख़त्ताब ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की वफ़ात के बाद उनको दुआ के लिए वसीला नहीं बनाया और न ही नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की क़ब्र पर गए, बल्कि अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब को दुआ के लिए वसीला बनाया।

عَنْ اَنَسِ ابْنِ مَالِكٍ ؓ اَنَّ عُمَرَ بْنَ الْخَطَّابِ كَانَ اِذَا قُحِطُوْا اسْتَسْقٰى بِالْعَبَّاسِ بْنِ عَبْدِ الْمُطَّلِبِ ؓ فَقَالَ اَللّٰهُمَّ اِنَّا كُنَّا نَتَوَسَّلُ اِلَيْكَ بِنَبِيِّنَا ﷺ فَتَسْقِيْنَا وَاِنَّا نَتَوَسَّلُ اِلَيْكَ بِعَمِّ نَبِيِّنَا فَاسْقِنَا فَيُسْقَوْنَ

(بخاری:ص:۱۳۷،ج:۱)

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु रिवायत करते हैं कि उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु जब अकाल (क़हत) पड़ता था, तो अब्बास बिन मुत्तलिब रज़ियल्लाहु अन्हु से बारिश के लिए दुआ कराते थे और कहते थे कि ऐ अल्लाह! हम (पहले) अपने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को तेरी तरफ़

(दुआ) के लिए वसीला बनाते थे और तू बारिश बरसाता था। (अब जब कि वह हममें नहीं हैं) हम अपने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के चचा को (दुआ के लिए) वसीला बनाते हैं, मालिक बारिश भेज, फिर बारिश होती।

—बुख़ारी,भाग 1 : 117

और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िलाफ़त के दौर में जो अकाल 'आमुर्रिमादा' (राख का साल) के नाम से जाना जाता है, सन् 18 हि० में गुज़रा है। इस वाक़िए की तफ़्सील अबूसालेह समान, जो उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अन्हु के ख़ज़ानची थे, यों बयान करते हैं—

فَلَمَّا صَعَدَ عُمَرُ مَعَ الْعَبَّاسِ الْمِنبَرَ قَالَ عُمَرُ ﷺ اَللّٰهُمَّ اِنَّا تَوَجَّهْنَا اِلَيْكَ بِعَمِّ نَبِيِّكَ وَصِنْوِ اَبِيْهِ فَاسْقِنَا الْغَيْثَ وَلَاتَجْعَلْنَا مِنَ الْقَانِطِيْنَ ثُمَّ قَالَ قُلْ يَا اَبَالْفَضْلِ، فَقَالَ الْعَبَّاسُ اَللّٰهُمَّ لَمْ يَنْزِلْ بَلَاءٌ اِلَّا بِذَنْبٍ وَّلَمْ يُكْشَفْ اِلَّا بِتَوْبَةٍ وَقَدْ تَوَجَّهَ بِيَ الْقَوْمُ اِلَيْكَ لِمَكَانِيْ مِنْ نَبِيِّكَ وَهٰذِهٖ اَيْدِيْنَا اِلَيْكَ بِالذُّنُوْبِ وَنَوَاصِيْنَا بِالتَّوْبَةِ فَاسْقِنَا الْغَيْثَ فارخت السَّمَآءُ شَآبِيْبَ مِثْلَ الْجِبَالِ حَتّٰى اخْصَبَّتِ الْاَرْضُ

(حاشیہ بخاری:جلد۱/۱۳۷)

'पस जब उमर रज़ियल्लाहु अन्हु अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु के साथ मिंबर पर चढ़े, तो उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा, ऐ मालिक! हम तेरे नबी के चचा के ज़रिए जो उनके बाप के भाई हैं, तेरी तरफ़ रुख़ करते हैं, तो ऐ मालिक! हमारे लिए पानी बरसा और हमें नाउम्मीद न कर, फिर उन्होंने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु से कहा कि अबुल फ़ज़्ल! अब आप दुआ करें। अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा कि मालिक! तेरी कोई बला नाज़िल नहीं होती, मगर गुनाह की वजह से और वह दूर नहीं होती, मगर तौबा से और इस वक़्त क़ौम ने तेरे नबी की निगाह में मेरे मक़ाम की वजह से तेरी बारगाह में मुझे ज़रिया बनाया है, तो ऐ मालिक! यह गुनाहों में सने हुए हाथ तेरे दरबार में उठे हुए हैं और हमारी पेशानियां तौबा के लिए तेरे सामने झुकी हुई

हैं, ऐ अल्लाह! हम पर बारिश बरसा। पस आसमान ने पहाड़ों जैसे मुहाने खोल दिए और ज़मीन जी उठी। (हाशिया बुख़ारी, भाग 1, पृ० 130) आख़िर नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से ज़्यादा फ़ज़ीलत वाली ज़ात कौन सी है, जिसका मरने के बाद दुआ में वसीला अख़्तियार किया जाए और उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु से ज़्यादा दीन को समझने वाला कौन हो सकता है, मगर नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की वफ़ात के बाद वे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की क़ब्र पर जाकर न तो उनकी ज़ात को वसीला बनाते हैं और न दुआ पानी बरसाने के लिए, बल्कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के चचा अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु, जो दुनिया में ज़िंदा थे, उनको दुआ के लिए वसीला बनाते हैं, वे दुआ करते हैं और मालिक बारिश बरसाता है।

अल्लाह तआ़ला को किसी के हक़ का वासता देना जायज़ नहीं

जिन लोगों ने वसीला के नाम से दीनी बुज़ुर्गों की मदद और नबियों और वलियों से इस्तिग़ासा (मदद) जायज़ कर रखा है, उन्होंने क़ुरआन के लफ़्ज़ वसीला (क़ुर्ब के अर्थ में) को उर्दू के लफ़्ज़ वसीला(ज़रिया के अर्थ में) के मानी वाला समझ लिया है, हालांकि क़ुरआन व हदीस से यह साबित है कि वसीला से 'तक़र्रुब' मुराद है। मुस्लिम की रिवायत है–

عَنْ عَبدالله بن عمرو بن العاص رضى الله عنهما قال قال رسول الله ﷺ اذا سمعتم المؤذن فقولوا مثل مايقول ثم صلوا على فانه من صلى على صلوة صلى الله عليه بها عشراً ثم سلوا الله لى الوسيلة فانّها منزلة فى الجنة لاينبغى الا لعبد من عباد الله وارجو ان اكون انا هو فمن سأل لى الوسيلة حلت عليه الشفاعة (رواه مسلم)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है

कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि जब तुम अज़ान देने वाले को अज़ान देते हुए सुनो, तो उन्हीं कलिमों को कहो, जो वह कह रहा हो, फिर मुझ पर दरूद पढ़ो, क्योंकि जो मुझ पर एक बार दरूद पढ़ता है, अल्लाह तआला उस पर दस रहमतें नाज़िल फ़रमाता है, फिर अल्लाह तआला से मेरे लिए वसीला तलब करो, क्योंकि यह वसीला जन्नत की वह जगह है जो अल्लाह के बन्दों में सिर्फ़ एक बन्दे के लायक़ है और मुझे उम्मीद है कि वह बन्दा मैं हूं। सुन लो, जिसने मेरे लिए अल्लाह तआला से यह वसीला मांगा, उसके लिए मेरी शफ़ाअत वाजिब हो गई। —मुस्लिम

मालूम हुआ कि वसीला जन्नत में सबसे ऊंची जगह का नाम है और बुख़ारी की रिवायत यों है—

عَنْ جَابر بن عبدالله ﷺ ان رسول الله ﷺ قال من قال حين يسمع النداء، اَللّٰهُمَّ رَبَّ هٰذِهِ الدعوة التامة والصلوٰة القآئمة ات محمد نالوسيلة والفضيلة وابعثه مقاما محمود نالذى وعدته حلت له شفاعتى يوم القيامة (بخارى)

'जाबिर बिन अब्दुल्लाह ‹ज़ियल्लाहु अन्हु रिवायत करते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, जिसने अज़ान सुन कर यह कहा कि ऐ अल्लाह! इस पूरी-पूरी पुकार के रब और हमेशा रहने वाली नमाज़ के मालिक अता फ़रमा मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को वसीला और फ़ज़ीलत और भेज उनको मक़ामे महमूद पर जिसका तूने वायदा किया है। (तो) ऐसे कहने वाले के लिए मेरी शफ़ाअत वाजिब हो गई। —बुख़ारी, भाग 1, पृ० 161

पस मालूम हुआ कि 'वसीला' से मुराद 'क़ुर्बे इलाही' है और इससे किसी की ज़ात को अल्लाह के हुज़ूर वसीला बनाना मक़्सूद नहीं। अल्लामा आलूसी तफ़्सीर रूहुल मआनी के मुसन्निफ़ (लेखक) ने बड़ी तफ़्सील से इस पर बात की है और लिखा है कि—

الاستعانة بمخلوق وجعله وسيلة بمعنى طلب الدعاء منه لاشك في جوازه ان كان المطلوب منه حيًّا واما اذا كان مطلوب منه ميتاً او غائباً فلا يستريب عالمٌ انه غير جائز وانه من البدع التى لم يفعلها احد من السلف ولم يرو عن احدٍ من الصحابة رضى الله عنهم وهم احرص الخلق على كلّ خير انه طلب من ميت شيئًا

(روح المعانى: ج:٦/١٢٥)

'किसी आदमी से दरख़्वास्त करना और उसको इस मानी में वसीला बनाना कि वह दुआ करे, उसके जायज़ होने में शक नहीं, बशर्ते कि जिससे दरख़्वास्त की जा रही हो, वह ज़िंदा हो और दूसरी तरफ़ मैयत या ग़ायब आदमी से दुआ कराने के नाजायज़ होने में किसी आलिम को भी शक नहीं और यह एक ऐसी बिदअत है, जिसे सलफ़ (पहले के बुज़ुर्गों) में से किसी ने नहीं किया। सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हु से बढ़कर नेकी और सवाब का हरीस (लोभी) और कौन हुआ है, लेकिन किसी एक सहाबी से भी नक़ल नहीं किया गया कि उन्होंने क़ब्र वाले से कुछ तलब किया हो। (तफ़्सीर रूहुल मआनी, भाग 6, पृ० 125) यही बात इमाम अबू हनीफ़ा और इमाम अबू यूसुफ़ रहमतुल्लाह अलैहि से साबित है। अबुल हुसैन क़ुदूरी अपनी फ़िक़्ह की किताब 'बिशरहिल करख़ी' के बाबुल करामत में लिखते हैं कि—

'बिश्र बिन वली कहते हैं कि मुझसे इमाम अबू यूसुफ़ ने बयान किया कि इमाम अबू हनीफ़ा रहमतुल्लाह अलैहि ने कहा कि किसी के लिए अल्लाह तआ़ला से उसकी ज़ात व सिफ़ात के अलावा हवाला देकर दुआ करना जायज़ नहीं है और मैं नाजायज़ समझता हूं कि कोई यों कहे 'तेरी मख़्लूक़ के हक़ के तौर पर' और यही क़ौल अबू यूसुफ़ का है। वह कहते हैं कि मैं भी नाजायज़ समझता हूं कि कोई यों कहे 'तेरे नबियों के हक़ के तौर पर' या 'तेरे रसूलों के हक़ के तौर पर' या 'बैतुल हराम के हक़ या मशअरुल हराम के हक़ के तौर पर।' इसके बाद इमाम क़ुदूरी कहते हैं कि अल्लाह से उसकी मख़्लूक़ का वास्ता देकर सवाल करना जायज़ नहीं है, क्योंकि किसी मख़्लूक़

الاستعانة بمخلوق وجعله وسيلة بمعنى طلب الدعاء منه لاشك في جوازه ان كان المطلوب منه حيًّا واما اذا كان مطلوب منه ميتاً او غائباً فلا يستريب عالمٌ انه غير جائز وانه من البدع التي لم يفعلها احد من السلف ولم يرو عن احدٍ من الصحابة رضى الله عنهم وهم احرص الخلق على كلّ خير انه طلب من ميت شيئًا

(روح المعانی: ج:٦/١٢٥)

'किसी आदमी से दर्ख़्वास्त करना और उसको इस मानी में वसीला बनाना कि वह दुआ करे, उसके जायज़ होने में शक नहीं, बशर्ते कि जिससे दर्ख़्वास्त की जा रही हो, वह ज़िंदा हो और दूसरी तरफ़ मैयत या ग़ायब आदमी से दुआ कराने के नाजायज़ होने में किसी आलिम को भी शक नहीं और यह एक ऐसी बिदअत है, जिसे सलफ़ (पहले के बुज़ुर्गों) में से किसी ने नहीं किया। सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हु से बढ़कर नेकी और सवाब का हरीस (लोभी) और कौन हुआ है, लेकिन किसी एक सहाबी से भी नक़ल नहीं किया गया कि उन्होंने क़ब्र वाले से कुछ तलब किया हो। (तफ़्सीर रूहुल मआनी, भाग 6, पृ० 125) यही बात इमाम अबू हनीफ़ा और इमाम अबू यूसुफ़ रहमतुल्लाह अलैहि से साबित है। अबुल हुसैन क़ुदूरी अपनी फ़िक़्ह की किताब 'बिशरहिल करख़ी' के बाबुल करामत में लिखते हैं कि–

'बिश्न बिन वली कहते हैं कि मुझसे इमाम अबू यूसुफ़ ने बयान किया कि इमाम अबू हनीफ़ा रहमतुल्लाह अलैहि ने कहा कि किसी के लिए अल्लाह तआला से उसकी ज़ात व सिफ़ात के अलावा हवाला देकर दुआ करना जायज़ नहीं है और मैं नाजायज़ समझता हूं कि कोई यों कहे 'तेरी मख़्लूक़ के हक़ के तौर पर' और यही क़ौल अबू यूसुफ़ का है। वह कहते हैं कि मैं भी नाजायज़ समझता हूं कि कोई यों कहे 'तेरे नबियों के हक़ के तौर पर' या 'तेरे रसूलों के हक़ के तौर पर' या 'बैतुल हराम के हक़ या मशअरुल हराम के हक़ के तौर पर।' इसके बाद इमाम क़ुदूरी कहते हैं कि अल्लाह से उसकी मख़्लूक़ का वास्ता देकर सवाल करना जायज़ नहीं है, क्योंकि किसी मख़्लूक़

का भी ख़ालिक़ पर कोई हक़ नहीं है कि वह उसे अदा करे। यही बात अहनाफ़ के मस्लक की सबसे मोतबर किताब हिदाया की 'किताबुल कराहियत' में है, उसके लफ़्ज़ इस तरह हैं–

'और जायज़ नहीं कि कोई अपनी दुआ में यों कहे कि फ़्लां के हक़ या अपने नबियों और रसूलों के हक़ के तुफ़ैल या सदक़े में, क्योंकि ख़ालिक़ पर किसी मख़लूक़ का कोई हक़ नहीं है।' —हिदाया, भाग 4 : 459, लाइन 3-4

यह कहना भी–

'ऐ अल्लाह! मैं तुझसे फ़्लां बन्दे के हक़ के वास्ते से सवाल करता हूं' या यों कहे कि 'इस जाह के वास्ते से' या 'उसकी हुर्मत के वास्ते से' सवाल करता हूं, मकरूहे तहरीमी है और यह बात हनफ़ियों की सारी किताबों के मतनों में लिखी हुई है। इमाम मुहम्मद रहमतुल्लाह के नज़दीक़ यह कहना ऐसा हराम है कि उस पर आग का अज़ाब होगा। (मुस्तफ़ाज़ मिन हील्यतिल इंसान, पृ० 201) मालूम होना चाहिए कि 'करह' का लफ़्ज़ हदीस और बुज़ुर्गों की तहरीरों में मक्रूहे तंज़ीही से लेकर हराम तक के लिए इस्तेमाल होता था और यहां मक्रूहे तहरीमी के लिए आया है।

इन सारे फ़तवों के बावजूद मालूम नहीं क्यों कुछ लोगों ने यह इबारत बे-दलील लिख दी है–

'अतबत्ता फ़्लां की हुर्मत से दुआ मांगने में कोई कलाम नहीं, यह सबके नज़दीक़ जायज़ है। (जवाहिरुल क़ुरआन, भाग 3, पृ० 637) और क्या इस ज़ुल्म का कोई अन्दाज़ा लगा सकता है जो इन पाए के सूफ़ियों के गिरोह ने इस्लाम पर ढाया है। हर दुआ में पहले वे उन 'हक़ों' का एक सिलसिला शुरू कर देते हैं और इसका नाम उन्होंने 'शजरा शरीफ़' रख दिया है। अल्लाह तआला पर उसके बन्दों की 'धौंस' का यह अन्दाज़ भी ख़ूब है।

अफ़सोस कि आज अल्लाह को कभी नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का वास्ता दिलाया जाता है, कभी किसी वली का, कभी किसी पीर का और क़ुरआन की वसीला वाली आयत को लोगों ने उर्दू ज़बान के वसीला के मानी में ढाल कर दुआओं में अल्लाह के नेक बन्दों की ज़ात को वसीला बनाने का मज़म्मत वाला तरीक़ा ईजाद कर लिया है, जबकि सारे तफ़्सीर लिखने वाले

इस बात पर एक राय हैं कि यहां वसीला से मुराद अल्लाह का तक़र्रुब है और वह ईमान और नक अमलों ही के ज़रिए से मुम्किन है, आयत यह है–

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَابْتَغُوْٓا اِلَيْهِ الْوَسِيْلَةَ وَجَاهِدُوْا فِيْ سَبِيْلِهٖ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ (المائدہ:٣٥)

'ऐ ईमान वालो! अल्लाह से डरो और उसकी तरफ़ वसीला ढूंढो और जिहाद करो उसकी राह में, ताकि फ़लाह पाओ।' –माइदा : 35

क़ुरआन की इस आयत से साफ़ ज़ाहिर है कि 'वसीला' से क़ुरबत और तक़र्रुब मुराद है और वह ईमान, तक़्वा और अल्लाह के रास्ते के जिहाद से हासिल हो सकता है और यही ईमान व अमल का वसीला ही वह वसीला है, जिसके हक़ होने पर सब एक राय हैं–

'हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा रिवायत करते हैं कि मैंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को यह फ़रमाते हुए सुना कि तुमसे पहले लोगों में तीन आदमी सफ़र कर रहे थे, यहां तक की रात आ गई और रात गुज़ारने के लिए वे एक ग़ार में दाखिल हो गए और पहाड़ की चट्टान ऊपर से गिरी और उसने ग़ार के मुंह को बन्द कर दिया। इन तीनों ने आपस में कहा कि मुसीबत से तुम्हें कोई चीज़ निजात दिलाने वाली नहीं है, अलावा इसके कि तुम अपने नेक अमल के ज़रिए से दुआ करो। इनमें से एक ने कहा कि अल्लाह! मेरे मां-बाप बूढ़े थे और जब तक मैं उनको खिला-पिला न लूं, न तो बाल-बच्चों को खिलाता था, और न जानवरों को और एक दिन रोज़ी की तलाश में बहुत दूर निकल गया और जब वापस आया, तो वे दोनों सो चुके थे। मैंने दूध दूहा, ताकि उनको पिलाऊं, मगर उनको सोता हुआ पाया। मैंने न तो यह पसन्द किया कि उनको जगाऊं और न यही कि उनसे पहले किसी और को खिलाऊं, इस तरह मैं प्याला हाथ में लिए उनके जागने का इन्तिज़ार करता रहा और मेरे बच्चे भूख से बेताब होकर मेरे क़दमों में लोटते रहे, यहां तक कि फ़ज्र हो गई और वे दोनों जाग उठे और दूध पी लिया। ऐ मालिक! अगर यह मैंने तेरी रिज़ा हासिल करने के लिए किया हो तो इस चट्टान की मुसीबत को हमसे हटा दे। चट्टान कुछ हट

गई मगर इतनी नहीं की वे बाहर निकल सकें। अब दूसरे ने कहा कि मालिक! मेरे चचा की बेटी थी जो दुनिया में मुझे सबसे ज़्यादा प्यारी थी। मैंने उससे बुरे काम का इरादा किया, मगर वह राज़ी न हुई। वक़्त गुज़रता गया, यहां तक कि उस पर अकाल का सख़्त वक़्त पड़ा। वह मेरे पास मदद मांगती हुई आई। मैंने उसको एक सौ बीस दीनार इस शर्त पर दिए कि वह मेरे साथ बुरा काम करेगी। वह राज़ी हो गई, लेकिन जब मैंने उस पर क़ाबू पा लिया, तो कहने लगी कि अल्लाह से डर, मोहर को नाजायज़ तरीक़े पर न तोड़। मैं उसके पास से हट गया, हालांकि वह मुझे दुनिया में सबसे ज़्यादा महबूब थी। मैंने वे दीनार भी उसके पास रहने दिए और वापस नहीं लिए। ऐ मालिक! अगर यह सब कुछ मैंने तेरी रिज़ा के लिए किया था, तो हमको इस मुसीबत से निजात दे। चट्टान कुछ और हट गई, लेकिन अभी तक बाहर निकलना उनके लिए मुम्किन नहीं था। तीसरे आदमी ने कहा कि ऐ अल्लाह! मैंने कुछ मज़दूरों को उजरत पर रखा और सबको उनकी उजरतें दे दीं, लेकिन एक मज़दूर अपनी मज़दूरी के बग़ैर चला गया। मैंने उसकी उजरत को काम में लगाया और बहुत-सा माल नफ़ा में हासिल हुआ। कुछ मुद्दत के बाद वह मज़दूर आ गया और उसने मुझसे कहा कि ऐ अल्लाह के बन्दे! मेरी मज़दूरी मुझे दे दे। मैंने उससे कहा कि यह सब कुछ जो तू देख रहा है, ये ऊंट, ये गाएं, ये भेड़ें, ये ग़ुलाम, यह सब तेरी ही उजरत है।

वह बोला, अल्लाह के बन्दे! मुझसे मज़ाक़ न कर। मैंने जवाब दिया, मैं तुझसे मज़ाक़ नहीं करता (बल्कि हक़ीक़ी बात यही है) पस उसने सब कुछ ले लिया और हंका ले गया, एक चीज़ भी न छोड़ी। ऐ अल्लाह! अगर मैंने यह सब कुछ तेरी रिज़ा के लिए किया हो, तो हमारी इस मुसीबत से हमें निकाल, पस चट्टान हट गई और वे तीनों बाहर निकल कर चल दिए।—बुख़ारी-मुस्लिम

साबित हुआ कि अल्लाह तआ़ला को अपने ईमान व अमल का वास्ता देना सही है, किसी की ज़ात या उसके अमलों का वास्ता देना सही नहीं।

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की वफ़ात के बाद उनकी ज़ात को वसीला बनाना

इस सिलसिले में भी बे-हिसाब गुमराहियां उम्मत के अन्दर रिवाज पा

गई हैं। क़ुरआन करीम की आयत 'और अगर ये लोग अपने नफ़्सों पर ज़ुल्म करने के बाद तेरे पास आ जाते और अल्लाह तआला से इस्तग़्फ़ार करते और तू भी उनके वास्ते इस्तग़्फ़ार करता तो यक़ीनन वे अल्लाह तआला को बख़्शने वाला और रहम करने वाला पाते।' —सूरः निसा : 63

इस आयत से कुछ न जानने वाले यह निकालने की कोशिश करते हैं कि जिस तरह ज़िंदगी में लोग नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास इस्तग़्फ़ार करने के लिए आया करते थे, उसी तरह अब उनकी वफ़ात के बाद क़ब्र पर आकर यही काम करना चाहिए, मगर किसी एक सहाबी से भी सहीह रिवायत में यह बात साबित नहीं है कि उन्होंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की क़ब्र पर जाकर दुआ की दरख़्वास्त की हो। हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अन्हु के क़हत के ज़माने का वह वाक़िया, जो पीछे के पन्नों में गुज़र चुका है, इसकी रोशन मिसाल है। सहाबा किराम और सहाबियात रज़ियल्लाहु अन्हुम पर कैसे-कैसे सख़्त वक़्त आए हैं, हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु को इर्तिदाद (पलट जाने) के फ़ित्ने का सामना करना पड़ा, उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अन्हु को क़हत की मसीबत ने घुला दिया। हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के ख़िलाफ़ बाग़ियों ने क्या कुछ नहीं किया, बाग़ियों के घेरे को तोड़कर कभी-कभी वह मस्जिदे नबवी में आए ज़रूर, मगर नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की क़ब्र पर जाकर दुआ की दरख़्वास्त नहीं की। जुमल और सिफ़्फ़ीन की लड़ाई में कौन-सी मुसीबत है जिससे उम्मत दो चार नहीं हुई, मगर न आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा क़ब्रे नबवी पर दुआ की दरख़्वास्त के लिए गईं और न अली रज़ियल्लाहु अन्हु।

इसी तरह क़ब्र वालों से वसीले की ताईद में कुछ और रिवायतें भी लाई जाती हैं, लेकिन ये सारी रिवायतें बे-असल और बनावटी है।

1. पहली रिवायत— एक बद्दू नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की क़ब्र के पास आया और अपने आपको क़ब्र पर गिरा दिया और कहा कि मैं आपके पास इसलिए आया हूं कि आप मेरे लिए इस्तग़्फ़ार करें, पस नबी की क़ब्र से आवाज़ आई कि तुझे माफ़ कर दिया गया। यह रिवायत बिल्कुल गढ़ी हुई है, इसमें एक रावी हैसम बिन अदी ताई है, जिसे हदीस के माहिरों ने कज़्ज़ाब

(झूठा) और वज़्ज़ाअ़ (गढ़ने वाला) कहा है। यह्या बिन मुईन कहते हैं कि वह कज़्ज़ाब है, झूठी रिवायतें बनाया करता था। अबूदाऊद कहते हैं कि वह झूठा है।

—लिसानुल हैवान, भाग 6, पृ० 209

2. दूसरी रिवायत— उस्मान बिन हनीफ़ रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत की जाती है कि एक अंधा आदमी अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में आया और कहा कि आप दुआ फ़रमाएं कि अल्लाह तआ़ला मुझे आंख वाला बना दे। फिर उन साहब ने कहा कि पालनहार! मैं तुझसे सवाल करता हूं और तेरी तरफ़ तेरे नबी-ए-रहमत के ज़रिए रुख़ करता हूं।

यह वाक़िया कुछ रिवायतों में आपकी ज़िंदगी का है और कुछ में आपकी वफ़ात के बाद का, लेकिन इसके हर एक तरीक़ में अबूजाफ़र हैं, जिसको इमाम मुस्लिम वज़्ज़ाअ़ (हदीसें गढ़ने वाला) बताते हैं (ख़ुत्बा सहीह मुस्लिम : 5-6) इमाम नववी कहते हैं कि अबूजाफ़र अल-म-दीनी वज़्ज़ाअ़ (गढ़ने वाला) है। (मीज़ानुल एतदाल, भाग 2 : 78) दूसरी तरफ़ इस ग़लत रिवायत में भी ज़ात के बजाए दुआ का वसीला है।

आदम अलैहिस्सलाम का नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ज़ात को वसीला बनाने की ग़लत रिवायत

ग़ज़ब तो यह है कि एक ऐसी रिवायत भी लाई जाती है जिसमें आदम अलैहिस्सलाम से गुनाह हो जाने का क़िस्सा भी बयान किया गया है और यह भी कि फिर उनकी तौबा नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के वसीले से दुआ करने पर क़ुबूल हुई—

'जब आदम अलैहिस्सलाम से गुनाह हो गया तो उन्होंने आसमान की तरफ़ सर उठा कर मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के वसीले से मग़्फ़िरत की दुआ मांगी। अल्लाह तआ़ला ने मालूम किया कि यह 'मुहम्मद' कौन हैं? आदम अलैहिस्सलाम ने जवाब दिया कि जब तूने मुझे पैदा किया तो मैंने सर उठाकर अर्श की तरफ़ देखा और वहां लाइला-ह इल्लल्लाहु मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह लिखा हुआ पाया, तो मैं समझ गया कि जिसका नाम तूने अपने नाम के साथ लिखा है, उससे ज़्यादा अज़्मत वाला कोई नहीं हो सकता। अल्लाह ने कहा

कि आदम! तुमने सच कहा, वह आख़िरी नबी हैं और वह तुम्हारी ही औलाद से होंगे। अगर वह न होते तो तुम न पैदा किए गए होते।

और एक दूसरी रिवायत में यों है, 'ऐ नबी! अगर आप न होते, तो मैं कायनात को पैदा न करता।' (फ़ज़ाइले ज़िक्र, भाग 3, पृ० 143) अल्लाह! अल्लाह! यह अल्लाह तआ़ला और रसूल पर कितना ज़बरदस्त बोहतान है। क़ुरआन में तो अल्लाह तआ़ला आदम अलैहिस्सलाम की तौबा को क़ुबूल होने के सिलसिले में यों इर्शाद फ़रमाता है–

'पस, सीख लीं आदम ने अपने रब से कुछ बातें, फिर मुतवज्जह हो गया अल्लाह उस पर, बेशक वही है तौबा को कुबूल करने वाला मेहरबान (अल-बक़रः 37) अल्लाह तआ़ला तो फ़रमाता है कि हमने आदम को तौबा की दुआ सिखाई और इसके ख़िलाफ़ यह रिवायत कहती है कि यह आदम अलैहिस्सलाम का अपना इज्तिहाद था, यहां तक कि अल्लाह तआ़ला को यह मालूम करना पड़ा कि तुमने आख़िर मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का (वसीला कैसे पकड़ा)? तफ़्सीर लिखने वाले इस पर एक राय हैं कि वह दुआ जो अल्लाह तआ़ला ने सिखाई और जिसके ज़रिए दुआ क़ुबूल हुई, क़ुरआन में बयान कर दी गई है और वह यह है, 'आदम अलैहिस्सलाम व हव्वा ने कहा, ऐ हमारे रब! हमने अपनी जानों पर ज़ुल्म किया और अगर तू हमको न बख़्शे और हम पर रहम न करे, तो हम ज़रूर तबाह हो जाएंगे।

—अल-आराफ़ : 23

दूसरा हुक्म इस रिवायत में यह है कि कायनात के पैदा होने की वजह नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ज़ात को ठहराया गया है, हालांकि क़ुरआन फ़रमाता है–

'मैंने पैदा किया जिन्न और इंसान, मगर अपनी बन्दगी के लिए'।

—ज़ारियात 56

साबित हुआ कि कायनात की तख़्लीक़ का मक़्सद अल्लाह की बन्दगी है, न कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ज़ात, खुद नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ज़ात को अल्लाह की बन्दगी के लिए पैदा किया गया है, साथ ही यह भी कि हदीस के फ़न के लिहाज़ से भी इस रिवायत को हर हदीस

के माहिर ने मौज़ूअ् (गढ़ी हुई) बताया है, इसमें अब्दुर्रहमान बिन ज़ैद बिन असलम रिवायत करने वाला है और उस पर यह हुक्म लगाया गया है।

—मीज़ानुल एतदाल, भाग 2 : 106

किसी ख़ास क़ब्र की ज़ियारत का ग़लत अक़ीदा

कुछ दूसरे लोग कहते हैं कि हम फ़्लां बुज़ुर्ग के पास जाते हैं तो इसलिए जाते हैं कि आपके मज़ार की ज़ियारत की बड़ी फ़ज़ीलत है, यह बात भी सही नहीं है, क्योंकि आम क़ब्रों की ज़ियारत तो मुस्तहब है, मगर किसी ख़ास क़ब्र की ज़ियारत, यहां तक कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की क़ब्र की ज़ियारत के सिलसिले में जितनी भी रिवायतें हैं, उनके बारे में हदीस के इमामों का फ़ैसला है कि वे मौज़ूअ् यानी गढ़ी हुई हैं, एक भी सही हदीस नहीं है। फिर भी नादान कहते हैं कि अगर नबी की क़ब्र पर जाना ज़रूरी नहीं होता तो हज के मौक़े पर मदीना क्यों जाया जाता है। काश, कोई उनको बताए कि हज मक्का में होता है, मदीने से उसका कोई ताल्लुक़ नहीं। रहा नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की क़ब्र की ज़ियारत को जाना, तो यह काम न तो सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हु ने किया, न ताबिईन ने, न बाहर से आने वाले मुजाहिदों ने। अफ़सोस कि तुमने झूठी रिवायतों के ज़रिए क़ुरआन, हदीस और इज्माए सहाबा को झुठला दिया। मिसाल के तौर पर इसी रिवायत को लीजिए जो सबसे ज़्यादा मशहूर है।

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की क़ब्र की ज़ियारत की फ़ज़ीलत की बनावटी रिवायतें

1. जिसने मेरी क़ब्र की ज़ियारत की उसके लिए मेरी शफ़ाअत लाज़िम हो गई। (बज़्ज़ार)

यह रिवायत हदीस के इमामों के नज़दीक ज़ईफ़ और मुन्कर ही नहीं, बल्कि मौज़ूअ् (गढ़ी हुई) के दर्जे तक पहुंच जाती है। इसके अन्दर अब्दुल्लाह बिन इब्राहीम है जो अबूअम्र ग़िफ़ारी का बेटा है और यह ऐसा रिवायत करने वाला है जो मुन्कर रिवायतें बयान करता था और हदीस के कुछ इमामों ने इसको

काज़िब (झूठा और झूठी रिवायतें बनाने वाला) कहा है। इमाम अबूदाऊद का क़ौल है कि यह शेख़ (रिवायत करने वाला) मुन्किरुल हदीस है। इमाम दारे कुत्नी कहते हैं कि इसकी रिवायतें मुन्कर होती हैं और इमाम हाकिम कहते हैं कि अब्दुल्लाह सिक़ात (सच्चे) रिवायत करने वालों के नाम से गढ़ी हुई रिवायत बयान करता है और उसके दूसरे साथी इन झूठी रिवायतों को बयान नहीं करते, खुद इमाम बज़्ज़ार इस रिवायत को बयान करने के बाद लिखते हैं कि अब्दुल्लाह बिन इब्राहीम की इस रिवायत और दूसरी रिवायतों को कोई दूसरा बयान नहीं करता। —मीज़ानुल एतदाल, भाग 2, 20-21

यहां यह बात समझ लेनी चाहिए कि हदीसों के जमा करने वाले इमाम कभी-कभी सहीह, हसन, ज़ईफ़, सारी क़िस्म की रिवायतों को उम्मत की मालूमात के लिए लिख देते हैं और इसके बाद जो इन रिवायतों की हैसियत होती है, उसको भी बयान कर देते हैं। ज़ुल्म तो वे करते हैं जो रिवायतें तो लिख देते हैं, मगर जो तब्सरा मुहद्दिसों ने किया था, उसको छोड़ जाते हैं, इस तरह से उम्मत की गुमराही में इज़ाफ़ा होता जाता है। नबी की क़ब्र की ज़ियारत के सिलसिले की सारी रिवायतों का यही हाल है और इन दूसरी रिवायतों पर बहस आगे आ रही है। बिलाले हब्शी रज़ियल्लाहु अन्हु के शाम से मदीना मुनव्वरा की तरफ़ क़ब्रे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ज़ियारत के लिए सफ़र वाली रिवायत भी एतबार के क़ाबिल नहीं है, क्योंकि यह 'असर' भी ग़रीब और 'मुन्कर' है, इसकी सनद मजहूल है और इसमें इन्क़िताअ़ है। इसमें मुहम्मद बिन फ़ैज़ ग़स्सानी का इब्राहीम बिन मुहम्मद से तफ़र्रुद है और इब्राहीम बिन मुहम्मद मज्हूल है। उसके बारे में कुछ नहीं मालूम कि वह कौन था और क्या उसकी हैसियत थी और यही हाल उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रहमतुल्लाह अलैहि के क़ब्रे नबी पर सलाम पहुंचाने वाले असर का भी है, ग़लत और बनावटी, इसमें रिबाह बिन बशीर रावी मज्हूल है और अब्दुल्लाह बिन जाफ़र ज़ईफ़ है और हाकिम बिन दरदान ने कभी उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ से मुलाक़ात नहीं की।

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की क़ब्र के वसीले से बारिश

एक ग़लत रिवायत यह बनाई गई है कि मदीना वालों पर ज़बरदस्त अकाल पड़ा। लोगों ने हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा से शिकायत की तो आइशा रजि० ने कहा कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की क़ब्र के ऊपर रोशनदान बना दो, ताकि क़ब्र और आसमान के दर्मियान कोई चीज़ रोक न बने। पस लोगों ने यही किया और ऐसी बारिश हुई कि उसकी ज़रख़ेजी (उपजाऊपन) से हरियाली लहलहा उठी और ऊंट चर्बी की ज़्यादती से फूल गए और उस साल का नाम 'आमुल फ़त्क़' पड़ गया। —सुनने दारमी : 25, मिश्कात : 545

इस रिवायत की सनद यों है— अबू नोमान ने रिवायत बयान किया, उनसे सईद बिन ज़ैद बिन ज़ैद ने, उनसे अम्र बिन मालिक नुकरी ने, उनसे अबुल हौरा ने। इस रिवायत में कई कमज़ोरियां हैं—

1. सईद बिन ज़ैद को नसई ने कहा है कि क़वी नहीं है। यह्या बिन सईद कहते हैं कि ज़ईफ़ है। —मीज़ानुल एतदाल, भाग 1, पृ० 381

2. अबुल जौज़ा का आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा से सिमाअ़ नहीं है। इमाम बुख़ारी कहते हैं, साबित हुआ कि यह रिवायत मुंक़तअ़ भी है और ज़ईफ़ भी। (अत-तारीखुल कबीर, लेख : बुख़ारी, पृ० 17-18, भाग 2, क़िस्म 2, मीज़ानुल एतदाल, भाग 1, पृ० 129, तहज़ीबुत्तहज़ीब, भाग 1, पृ० 384)

कुछ लोग जो यह कहते हैं कि हम बुज़ुर्गों की क़ब्रों पर इसलिए हाज़िरी देते हैं कि वहां अल्लाह के नेक बन्दे दफ़न हैं और वहां दुआएं ज़्यादा क़ुबूल होती हैं, तो यह बात बे-असल है और इस चीज़ से नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने रोका है।

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का अपनी क़ब्र पर जमा होने से मना करना

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया—

'मेरी क़ब्र या मेरे घर को मेले की जगह न बनाओ' (अबूयाला और सईद बिन मंसूर)

एक तरफ़ यह हुक्म है अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का अपनी क़ब्र के लिए और दूसरी तरफ़ इस नाम की उम्मते मुहम्मदिया के उर्स और मेले हैं, ज़ियारतें और फेरे हैं, दुआएं और फ़रियादें हैं, दुहाइयां और पुकारें हैं मुनासिब है कि इस सिलसिले में इमाम अबू हनीफ़ा का सबक़ भरा वाक़िया भी सुन लिया जाए—

इमाम अबू हनीफ़ा रहमतुल्लाहि अलैहि ने एक आदमी को कुछ नेक लोगों की क़ब्रों के पास आकर सलाम करके यह कहते हुए सुना कि ऐ क़ब्र वालो! तुमको कुछ ख़बर भी है और क्या तुम पर इसका कुछ असर भी है कि मैं तुम्हारे पास महीनों से आ रहा हूं और तुमसे मेरा सवाल सिर्फ़ यह है कि मेरे हक़ में दुआ कर दो। बताओ, तुम्हें मेरे हाल की कुछ ख़बर भी है या तुम बिल्कुल ग़ाफ़िल हो। अबू हनीफ़ा रहमतुल्लाहि अलैहि ने उसका यह क़ौल सुनकर उससे मालूम किया कि क़ब्र वालों ने कुछ जवाब दिया? वह बोला, नहीं दिया। इमाम अबू हनीफ़ा रहमतुल्लाहि अलैहि ने यह सुनकर कहा कि तुझ पर फिटकार, तेरे दोनों हाथ धूल में सन जाएं, तू ऐसे जिस्मों से सवाल करता है, जो न जवाब ही दे सकते हैं और न वे किसी चीज़ के मालिक ही हैं और न आवाज़ ही सुन सकते हैं। फिर अबू हनीफ़ा रहमतुल्लाह अलैहि ने क़ुरआन की यह आयत तिलावत फ़रमाई—

'ऐ नबी! तुम उन लोगों को जो क़ब्र में हैं, कुछ नहीं सुना सकते।' (फ़ातिर : 26)

—ग़राइब फ़ी तहक़ीक़िल मज़ाहिब

हनफ़ी फ़िक़्ह और इल्मे कलाम की सारी एतबार वाली किताबों में भी यही लिखा है कि मुर्दे न सुनते हैं और न समझते हैं, जैसे, 'इसी तरह किसी ने यह क़सम खाई कि मैं तुमसे कलाम न करूंगा या यों कि मैं तुम्हारी मुलाक़ात और ज़ियारत को न आऊंगा, फिर मर जाने के बाद उसकी लाश से उसने कलाम किया या क़ब्र की ज़ियारत की, तो क़सम न टूटेगी, क्योंकि कलाम से मक़्सूद समझाना होता है और मौत उससे रोक देती है।

—शामी, भाग 3, पृ० 180

हिदाया की शरह फ़त्हुल क़दीर में भी इसी तरह है–

'अगर किसी ने यों क़सम खाई कि फ़्लां से कलाम नहीं करूंगा, तो यह ज़िंदगी के साथ महदूद (सीमित) है, पस अगर मौत के बाद कलाम किया तो क़सम न टूटेगी, क्योंकि कलाम से मक़्सूद समझाना होता है और मौत उससे रोक देती है, क्योंकि मैयत न सुन सकती है, न समझ सकती है।

—फ़त्हुल क़दीर, भाग 4, पृ० 100, लाइन 2

इसी तरह यह फ़िक़्ह का उसूल है, 'इस बात में किसी का अख़्तियार नहीं कि मैयत सुनने की ताक़त से पूरी तरह महरूम है।'

—शरहुल मक़ासिद, भाग 2, पृ० 23, शाहुल मवाक़िफ़ भाग 4, पृ० 162

मालूम हुआ कि अबूहनीफ़ा रहमतुल्लाह अलैहि और उनके मानने वाले इमामों का भी यही अक़ीदा था कि मुर्दे नहीं सुनते। इमाम के मानने वाले, फ़िक़्ही मस्अलों में तो इमाम के मामूली से मामूली मस्अले में इख़्तिलाफ़ बरदाश्त नहीं कर सकते, हालांकि फ़िक़्ही ग़लतियां माफ़ी के क़ाबिल हो सकती हैं, लेकिन अक़ीदों के मामले में इमाम की बात की बिल्कुल परवाह नहीं करते, भले ही अक़ीदे पर ही जन्नत व जहन्नम का इन्हिसार (आश्रय) है और यह सिमाअ़े मौता (मैयत का सुनना) का अक़ीदा तो शिर्क की जड़ है।

जो क़ब्र भी पूजी जाए वह बुत है

क़ुरआन व हदीस की इन सारी खुली तश्रीहों के बाद भी अगर उम्मते मुस्लिमा में आज अपने औलिया अल्लाह (अल्लाह के वलियों) के साथ वही मुश्रिकाना अक़ीदतमंदी पैदा हो गई है जो नूह अलैहिस्सलाम की क़ौम ने अपने औलिया, वद्द, सुवाअ़, यऊक़, और नस्र के साथ सही कर रखी थी, तो ताज्जुब की बात क्या है? शैतान को सबसे ज़्यादा दुश्मनी इस बात ही से तो है कि कोई अल्लाह का बन्दा अल्लाह तआ़ला को इस तरह अपना माबूद मान ले, जैसे उसके आख़िरी नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने बताया है। ज़रा ग़ौर तो कीजिए कि इससे बड़ा ज़ुल्म और क्या होगा कि जिस रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हमेशा क़ब्र परस्ती से रोका, उसी की 'क़ब्र'

को इबादत गाह का दर्जा दे दिया गया है। मस्जिदे नबवी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम में आप देखेंगे कि तहज्जुद का वक़्त है और लोग हाथ बांधे क़ब्र नबवी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का रुख़ किए खड़े हैं। कोई धीरे-धीरे रो रहा है, कोई दुआएं मांग रहा है और अब तो चोरी -छिपे क़ब्र का तवाफ़ भी कराया जाने लगा है। यह उस नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की क़ब्र के साथ मामला है, जिसने दुआ की थी—

'अता बिन यसार रहमतुल्लाह अलैहि रिवायत करते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने दुआ फ़रमाई कि ऐ अल्लाह! मेरी क़ब्र को बुत न बनाना कि उसको पूजा जाए। अल्लाह तआला का ग़ज़ब उस क़ौम पर भड़कता है जो क़ौम अपने नबियों की क़ब्रों को सज्दागाह बना लेती है।' —मुअत्ता

उम्मुल मोमिनीन हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा का कहना है कि इसी एहतियात की वजह से नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की क़ब्र को बाहर खुला नहीं छोड़ा गया कि कहीं वह सज्दागाह न बना ली जाए।

'हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा रिवायत करती हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने इस मरज़ में, जिससे उठना नसीब न हुआ, इर्शाद फ़रमाया कि अल्लाह तआला यहूदियों व ईसाइयों पर लानत फ़रमाए कि उन्होंने अपने नबियों की क़ब्रों को सज्दागाह बना लिया, हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा कहती हैं कि यही ख़ौफ़ न होता कि कहीं नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की क़ब्र को सज्दागाह न बना लिया जाए तो नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की क़ब्र को बाहर खुला छोड़ दिया जाता।

—बुख़ारी : 186

जिस बात के लिए यह सारी एहतियातें अख़्तियार की गई थीं, अफ़सोस! कि वही बात होकर रही और आज नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की क़ब्र बुरी तरह पूजी जा रही है। कोई उसका तवाफ़ करता है और कोई उसकी तरफ़ खड़े होकर आह व ज़ारी करता है, कोई अपने सलाम के बाद जवाब के इन्तिज़ार में रहता है और कोई दूसरे का सलाम पहुंचाता है और यक़ीन रखता है कि नबी अपनी क़ब्र में ज़िंदा हैं और सुन रहे हैं, क्या अजब कि जवाब भी दें। कभी ये ज़ालिम कहते हैं कि सलाम का जवाब मैंने

खुद सुना है और कभी क़ब्र से बाहर हाथ निकलवाकर उससे मुसाफ़ा करवाते हैं और गवाही में सारे मस्जिद के लोगों को, जिसमें अब्दुल क़ादिर जीलानी भी शामिल होते हैं, पेश करते हैं और जब यह कहा जाए कि अल्लाह तआला ने तो मरने वालों के बारे में फ़रमाया है कि ऐ नबी! आप भी उनको नहीं सुना सकते, तो जवाब मिलता है कि हां, सुनवाने को नहीं की है, सुनने को नहीं की है और जब उनको बताया जाता है कि (सिमाअ़-सुनाना) तो असल (जड़) है, जब जड़ की नहीं हो गई तो उससे सुनने की जो असल की शाख़ है आप से आप नफ़ी (नहीं) लाज़िम आएगी, तो हक्का-बक्का रह जाते हैं।

बहर हाल आज किसी में यह ताक़त नहीं है कि उम्मते मुस्लिमा को ताक़त के ज़ोर से इस बुराई से रोक दे, मगर इल्म वालों को यह ज़िम्मेदारी ज़रूरी है कि वे पूरी बात खुलकर कह दें कि लोगो! अगर अल्लाह पर ईमान लाने का इक़रार करने के बाद भी तुमने वही शिर्क भरे एतक़ाद बाक़ी रखे जो नूह अलैहिस्सलाम की क़ौम से लेकर आज तक हर मुश्रिक क़ौम में पाए जाते रहे हैं, तो तुम भी बुरे अंजाम से न बच सकोगे। इन क़ौमों ने अपने नबियों और बुज़ुर्गों के मर जाने के बाद भी मरने न दिया और आज तुम भी अपने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और दूसरे अल्लाह के बन्दों के साथ अलग-अलग बहानों और झूठी रिवायतों के ज़रिए यही काम कर रहे हो। तम्हारी किताब पुकार-पुकार कर कहती है–

'हमेशगी तो हमने तुमसे पहले भी किसी इंसान के लिए नहीं रखी है, अगर तुम मर गए तो क्या ये लोग हमेशा जीते रहेंगे? हर जानदार को मौत का मज़ा चखना है।' (अल-अंबिया : 34-35) 'हर चीज़ हलाक होने वाली है सिवाए अल्लाह की ज़ात के। (अल-क़सस) तुम्हारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि दूसरे नबियों की तरह मुझे भी मौत आएगी और जब मौत का वक़्त आता है तो उनकी मुबारक ज़ुबान से आख़िरी कलिमा यही निकलता है कि–

'अल्लाहुम-म अर-रफ़ीक़ुल आला'.

–बुख़ारी : 939

लेकिन तुम्हारी बद-अक़ीदगी में फ़र्क़ नहीं आता और तुम उनको क़ब्र में ज़िंदा बताते हो, अफ़सोस।

नबी की हयात का अक़ीदा शिर्क की जड़ है

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की वफ़ात पर सबसे पहले जो मस्अला अल्लाह के हुक्म से उठा, वह यही मस्अला था कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को मौत आ गई या नहीं। आख़िर यह मस्अला कैसे न उठता जबकि मौत के बाद दुनिया की ज़िंदगी का अक़ीदा ही तो शिर्क की जड़ है। शुक्र है कि उसी वक़्त इस बात का फ़ैसला भी हो गया और सहाबा किराम का इज्माअ़ भी कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम वफ़ात पा गए। अब दुनिया में ज़िंदा नहीं हैं और यह औलिया अल्लाह के सरदार अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु की इस बात के बाद कि जो मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का पुजारी था, उसको मालूम हो कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को तो मौत आ गई और जो अल्लाह तआ़ला की इबादत करता था, वह जान ले कि अल्लाह ज़िंदा जावेद है, उसे मौत नहीं। उमर रज़ियल्लाहु अन्हु को ग़म था कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम वफ़ात पा गए और मैं कलाला के मस्अलों के बारे में पूरी तफ़्सील न मालूम कर सका।

लोगो! अल्लाह तआ़ला का फ़रमान, नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद और सहाबा किराम का इज्माअ़ तुम्हारे सामने है, मगर तुम कहते हो कि नहीं, नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपनी क़ब्र में ज़िंदा ही नहीं, बल्कि दुनिया में आते जाते रहते हैं। अफ़सोस कि तुमने अल्लाह तआ़ला के साथ दूसरा 'अल-हय्यि' (ज़िंदा) गढ़ लिया और उनकी बात न मानी। सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हु अपने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर जान छिड़कते थे, अगर उनको ख़्याल तक होता कि उनके नबी ज़िंदा-जावेद हैं, तो वे भी उनका ख़लीफ़ा न चुनते, न अपने नबी का कफ़न-दफ़न करते, न उनको क़ब्र में उतारते, न इज्तिहाद की कोई ज़रूरत पेश आती और न रिजाल की (हदीस से मुताल्लिक़ लोग) की छान-बीन और हदीसों की तहक़ीक़ में मेहनत करनी पड़ती, जब भी जिस चीज़ की ज़रूरत होती, क़ब्र पर पहुंचकर मालूम कर लेते, अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु इर्तिदाद (धर्म-विमुखता) के मौक़े पर वहां से

रहनुमाई हासिल करते, उमर रज़ियल्लाहु अन्हु अकाल के वक़्त, उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु फ़ित्ना और आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा और अली रज़ियल्लाहु अन्हु जुमल और सिफ़्फ़ीन की लड़ाई के मौक़े पर, असल में यह ज़ुल्म यों हुआ कि एक मुद्दत बीत जाने के बाद दीनदारी के फ़न के माहिरों ने अपना पेशा चमकाने के लिए हिन्दुओं की तरह देवताओं और देवियों की फ़ौज तैयार करके उनके चारों तरफ़ एक शानदार देवमाला का ताना-बाना बुन दिया, फिर इस्लामी काशी और मथुरा वजूद में आए और मुसलमान गनेशों और मुरलियों ने जन्म लिया, खड़े पत्थरों की जगह पड़े पत्थरों ने क़ब्रों की शक्ल में अपने स्थान बनाए और दर्शन का नाम 'ज़ियारत' रखा गया, प्रणाम की जगह सलाम ने ले ली, दंडवत ने ताज़ीमी सज्दे का जामा पहना, फेरों के बजाए तवाफ़ होने लगे, प्रसाद तबर्रुक बन गया, भजन ने क़व्वाली का रूप धार लिया और यह मौजूदा 'दीन' वजूद में आया, फिर हज़ारों क़ैदी बने, लाखों की अस्मतें बर्बाद हुईं, ला तायदाद लाशें तड़पीं, नव-नहालों का ख़ून चूस-चूस कर यह धरती सींची गई, मगर इस नए दीन की बहारों का एक फूल न कुम्हलाया।

कोई कहे या न कहे, हम ऐलान करते हैं कि यह दीन हमारा दीन नहीं, यह ईमान हमारा ईमान नहीं। हम तो ऐसे दीन, ऐसे ईमान के जानी दुश्मन हैं। हम तो उस सच्चे दीन और सच्चे ईमान के क़ायल हैं जो इबादतों, मामलों, किरदार व अमल, तहज़ीब व तमद्दुन, तालीम व तहज़ीब व सियासत, सुलह व लड़ाई, ग़रज़ ज़िंदगी के हर शोबे को अल्लाह के रंग में रंग दे और ग़ैर-अल्लाह की बन्दगी का एक धब्बा भी बाक़ी न छोड़े। अगर यह इंक़िलाब ज़िंदगी में ज़ाहिर न हो तो समझ लो कि दो बातों में से एक बात ज़रूर है—

1. या तो ईमान का इक़रार करने वाला कम अक़्ल और सिफ़ला (नालायक़) है और ईमान के तक़ाज़ों की समझ ही नहीं रखता।

2. या वह मुनाफ़िक़ है कि ज़ुबान से तो इक़रार कर रहा है; मगर दिल से मान कर ज़िंदगी और माहौल में तब्दीली लाने पर तैयार नहीं है। वह ईमान हरगिज़ ईमान नहीं है जिसके असर से इंसान के किरदार व अमल में, उसकी सुबह व शाम में इंक़िलाब न आ जाए। सच्चे ईमान ही को यह तौफ़ीक़

मिलती है कि वह अल्लाह की राह में उसकी तौहीद के क़ायम करने के लिए सर हथेली में लेकर मैदान में उतरे और बातिल को ललकारे, फिर ज़मीन कांपे, सर उछलें, सीने चाक हों, आसमान धुएं से भर जाए और जब ज़मीन को सुकून मिले और गर्द छंटे तो यह मालूम हो कि हक़ अपने वसीलों की कमी के बावजूद कामियाब है और बातिल पसपा और बेहाल। हमारे सामने यही एक निशाना है, हम अल्लाह के बन्दों को बराबर इसी ईमान की तरफ़ बुलाते रहेंगे, चाहे एक हाथ भी हमारी हिमायत में न उठे और एक ज़ुबान भी हमारी ताईद करने पर तैयार न हो, इनशाअल्लाह! क्योंकि इसी तरह से ज़िल्लत इज़्ज़त में, बे-आबरूई आबरूमंदी में और बुज़दिली जुरात में बदल सकती है और फिर यह ख़राब व ख़स्ता, ज़लील व रुस्वा उम्मत, दुनिया व आख़िरत में सरफ़राज़ी, कामरानी और ताजदारी की हक़दार बन सकती है।

अल्लाह तआला वह दिन जल्द लाए, आमीन।

इस सिलसिले में अभी हमारे सामने नीचे लिखे काम हैं–

1. गली-कूचों, सड़कों और बाज़ारों में एक अल्लाह की ओर बुलाना, उसकी बन्दगी की दावत देना,

2. घरों, मस्जिदों और महफ़िलों में क़ुरआन व हदीस के दर्स के ज़रिए लोगों को दीने हक़ के तक़ाज़ों की जानकारी देना,

3. दीन की तालीम का ऐसा इन्तिज़ाम करना कि एक मुसलमान अपनी इस्तेदाद के मुताबिक़ उससे फ़ायदा उठाकर ख़ालिस दीन पर चल सके,

4. तहरीर (लेख) के ज़रिए दीन की ख़ालिस दावत को फैलाना,

5. सबसे बढ़कर खुद अपनी ज़िंदगी से इस बात की गवाही देना कि बन्दगी ख़ालिस तौर पर अल्लाह तआला की होगी और उस तरीक़े पर जो नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सुन्नत का तरीक़ा है,

6. अल्लाह के ऐसे बन्दों को खोजना, जो एक मालिक की बन्दगी पर जम जाने का अज़्म रखते हों, उन्हें यकजा व मुनज़्ज़म करना और फिर उनको साथ लेकर अल्लाह के कलिमे को बुलन्द करने के लिए अल्लाह के रास्ते के जिहाद की बाज़ी खेलना।

आख़िर में हम उन लोगों से जिन तक हमारी यह दावत पहुंचे, यह उम्मीद रखते हैं कि वे इसको हर तरह से जांचेंगे, परखेंगे और अगर हक़ पाएंगे तो हमारा साथ देने की कोशिश करेंगे। अल्लाह तआ़ला हम सबको इस्लाम पर ज़िंदा रहने और ईमान पर मरने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए, आमीन।

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की क़ब्र की ज़ियारत की दूसरी झूठी रिवायतें

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की क़ब्र की ज़ियारत के सिलसिले में जो रिवायतें भी बयान की जाती हैं, वे सब की सब गढ़ी हुई बनावटी हैं, लेकिन एक सवाल बहरहाल बाक़ी रह जाता है कि आख़िर इन अनगिनत रिवायतों के लिए ये सारी कोशिशें क्यों की गईं, तो जवाब साफ़ है कि क़ुरआन, हदीस और सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम के तआ़मुल से क़ब्र परस्ती के लिए कोई जवाब मिलना मुम्किन न था, इसलिए इन बनावटी रिवायतों के ज़रिए नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की क़ब्र की ज़ियारत पर ज़ोर देकर दूसरी ख़ास क़ब्रों पर हीलों और जमघटों को सही साबित करने की कोशिश की गई।

'जिसने मेरी क़ब्र की ज़ियारत की, मेरी शफ़ाअत उसके लिए ज़रूरी हो गई', का ज़िक्र किया जा चुका है। नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की क़ब्र की ज़ियारत के सिलसिले की दूसरी रिवायतें ये हैं, ये सब भी एतबार के क़ाबिल नहीं हैं।

2. दूसरी रिवायत यों है—

'जिसने मेरी क़ब्र की ज़ियारत की, उसके लिए मेरी शफ़ाअत वाजिब हो गई।' (बैहक़ी, दारमी) वग़ैरह

इमाम बैहक़ी ने अपनी किताब शोबुलईमान में पूरी सनद भी बयान की है और फ़रमाते हैं कि यह हदीस मुन्कर है। इसमें मूसा बिन हिलाल रिवायत करने वाला है जो मज्हूल है और अब्दुल्लाह अमरी नाफ़ेअ़ से नक़ल करने में 'याददाश्त में ख़राबी' और 'ग़फ़लत' बहुत ज़्यादा सामने आती है और नाफ़ेअ़ के सिक़ा शागिर्दों, जैसे अय्यूब, यहया बिन सईद अंसारी, इमाम मालिक

रहमतुल्लाह अलैहि वग़ैरह ने इस रिवायत को नक़ल नहीं किया है। यही राय इमाम अक़ीली की किताब 'अज़-ज़ुअफ़ा' में इस रिवायत के बारे में है और यही बात इमाम राज़ी ने 'किताबुज़-जिरह वत्तादील' में कही है और छः सहीहों (सिहाहे सित्ता) के इमामों में से किसी ने भी इस रिवायत को क़ुबूल करने के क़ाबिल नहीं समझा। —मीज़ानुल एतदाल, भाग 3, पृ० 230, भाग 2, पृ० 58

3. तीसरी रिवायत यों है

'जिसने हज किया और मेरी क़ब्र की ज़ियारत की, मेरी मौत के बाद उसकी मिसाल ऐसी है कि जैसे उसने ज़िंदगी में मेरी ज़ियारत की।'
—दारेक़ुत्नी

और दूसरी रिवायत में है कि गोया उसने मेरी ज़िंदगी और मेरी सोहबत में मेरी ज़ियारत की।
—दारेक़ुत्नी

यह रिवायत बिना सनद के, और गढ़ी हुई है। हदीस के इमामों ने इसको गढ़ी हुई और झूठी रिवायतों में से एक क़रार दिया है। इसके अन्दर हफ़्स बिन सुलैमान अबूदाऊद हैं, जिसके बारे में हदीस के इमामों की राय यह है—

'यह मतरूकुल हदीस है।' —इमाम अहमद

'हदीस के माहिरों ने इसे छोड़ दिया है।' —इमाम बुख़ारी

'कहते हैं कि तर्क कर (छोड़) दी गई है।' —इमाम मुस्लिम

'कहते हैं कि वह सिक़ा नहीं है और उसकी हदीसें नहीं मानी जातीं'
—इमाम नसई

'वह कज़्ज़ाब है (यानी झूठी रिवायतें गढ़ने वाला) अब्दुर्रहमान बिन यूसुफ़'
—मीज़ानुल एतदाल, भाग 1, पृ० 261

4. इस सिलसिले में चौथी रिवायत यों है—

'अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि जिसने हज किया और फिर मेरी ज़ियारत न की, तो उसने मुझ पर ज़ुल्म किया'
—दारे क़ुत्नी

इमाम दारे क़ुत्नी ने इसको रिवायत करने के बाद कहा कि इसमें एक शेख़ मुहम्मद बिन मुहम्मद बिन नोमान बिन शब्ल अकेले हैं और वह मुन्करुल

हदीस हैं।

इमाम इब्ने जौज़ी कहते हैं कि यह रिवायत गढ़ी हुई है।

—मीज़ानुल एतदाल, भाग 3, पृ० 129

5. पांचवी रिवायत यह है—

कहा अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कि जिसने मेरी क़ब्र की ज़ियारत की या यह कहा (रिवायत करने वाले ने अपना शक बयान किया) कि जिसने मेरी ज़ियारत की, मैं उसका शफ़ीअ़ या शहीद हूंगा। अबूदाऊद तयालिसी ने इसको अपनी मुस्नद में बयान किया। इस रिवायत में भी ऊपर वाली दूसरी रिवायतों की तरह कई कमियां है, इसकी सनद में इज़्तिराब है, इंक़िताअ़ है, जिहालत और इबहाम है। इमाम बैहक़ी रहमतुल्लाह अलैहि ने उसको अपनी किताब 'अस्सुननुल कुबरा' में बयान करने के बाद फ़ैसला फ़रमाया कि 'हाज़ा अस्नादुन मज्हूल' और रिवायत करने वाला सवार बिन मैमून मज्हूल है। इसी तरह से दूसरा मज्हूल रावी है जिसका नाम लिया गया है न वलदियत, यानी रुजुलुम मिन आले उमर (उमर बिन ख़त्ताब की औलाद में से एक मर्द)

6. छठी रिवायत यह है—

'अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि जो मेरी क़ब्र के क़रीब दरूद पढ़े, तो मैं सुनता हूं और जो क़ब्र से दूर मुझ पर दरूद पढ़े, वह मुझ तक पहुंचा दिया जाता है। इमाम अक़ीली ने इसको रिवायत करने के बाद लिखा है कि यह बे-असल है। इस रिवायत में मुहम्मद बिन मरवान अकेला रावी है और मुहम्मद बिन मरवान हदीस को छोड़ देने वाला है। जरीर का कहना है कि मुहम्मद बिन मरवान झूठा है। अक़ीली का क़ौल है कि इब्ने नुमैर कहते थे कि मुहम्मद बिन मरवान कलमी 'झूठा' है। इमाम नसई उसको हदीस छोड़ देने वाला कहते हैं, सालेह कहते हैं कि वह रिवायतें गढ़ा करता है। इब्ने हब्बान कहते हैं कि वह उन लोगों में से है जो 'गढ़ी हुई' रिवायतें बयान करते हैं। इसी मज़्मून की एक दूसरी रिवायत अबूहुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु के बजाए अब्दुल्लाह बिन उमर से है और उसमें वह्ब बिन वह्ब अबुल बख़्तरी क़ाज़ी है और सारे इल्म वाले लोग उसको

'झूठा' और 'गढ़ने वाला' कहते हैं। —मीज़ानुल एतदाल, भाग 3, पृ० 132, 278

7. सातवीं रिवायत यह है—

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि जब कोई बन्दा मेरी क़ब्र के पास मुझ पर सलाम कहता है, तो एक फ़रिश्ता, जिसको अल्लाह ने वहां लगा दिया है, इस सलाम को मुझ तक पहुंचा देता है और उस बन्दे के आख़िरत और दुनिया के मामलों की किफ़ायत की जाती है और क़ियामत के दिन मैं उस बन्दे का शहीद या शफ़ीअ़ हूंगा। —बैहक़ी

यह रिवायत मानी के लिहाज़ से ऊपर वाली रिवायत के बिल्कुल ख़िलाफ़ है। ऊपर वाली रिवायत क़ब्र के क़रीब 'सुनना' ज़ाहिर करती है और यह 'न सुनने को'। सनद के लिहाज़ से इसमें मुहम्मद बिन मूसा बसरी को 'झूठा' और 'रिवायतें गढ़ने वाला या अपनी तरफ़ से बनाने वाला' कहा गया है। इब्ने अदी कहते हैं कि मुहम्मद बिन मूसा हदीस बनाता था। इब्ने हब्बान कहते हैं कि अपनी तरफ़ से रिवायतें बनाता है और उसने एक हज़ार से ज़्यादा हदीसें गढ़ी हैं। —मीज़ानुल एतदाल, जिल्द 3 : 141

या सारियतुल जबल, अल-जबल झूठी बात है

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के क़ब्र की ज़ियारत के सिलसिले की इन बनावटी रिवायतों के बाद मुनासिब है कि उस झूठी रिवायत की भी क़लई खोल दी जाए, जिसने ईमान को बर्बाद कर डाला है और उम्मत के ख़तीब और वाज़ व नसीहत करने वाले लहक-लहक कर मिंबर व मेहराब से उसका चर्चा करते हैं। कहते हैं कि देखो 'वली' जब इस ज़िंदगी के जामे में घिर जाता है और मौत के आने से पहले ही जो उसको आज़ाद करने और उसकी ताक़तों को बढ़ाने वाली होती है, सैंकड़ों मील देखता है और पुकार कर हिदायत फ़रमाता है, तुम नादानो! कहते हो कि 'वली' ग़ायबाना कुछ नहीं रखता, ख़ाली मजबूर है, उसे कुछ ख़बर नहीं होती, आख़िर उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने मस्जिदे नबवी में जुमा का ख़ुत्बा देते वक़्त ईरान में सारिया की फ़ौज को कैसे देख लिया और कैसे उनकी रहनुमाई फ़रमाई, अफ़सोस इस उम्मत पर जिसके अन्दर ऐसी बनावटी रिवायत ईजाद कर ली जाए जो 'वली' की करामत नहीं, बल्कि उसकी ख़ुदाई साबित करे और उसको इल्म व तसर्रुफ़ की सिफ़्तों में

अल्लाह का शरीक ठहराए, रिवायतों के पूरे सरमाए में इससे ज़्यादा किसी दूसरी रिवायत ने दुनिया के अक़ीदे को ख़राब नहीं किया। रिवायत यों है—

इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हु रिवायत करते हैं कि हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु ने एक फ़ौज भेजी, और उसका सालार (सेना पति) सारिया को बनाया। एक दिन जुमा के खुत्बे में उन्होंने यकायक यह पुकारना शुरू कर दिया, ऐ सारिया! पहाड़-पहाड़! इस तरह तीन बार कहा, फिर उस फ़ौज का पैग़म्बर (दूत) मदीने आया और उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने उससे फ़ौज का हाल मालूम किया, तो उसने कहा कि ऐ अमीरुल मोमिनीन! हम लोग हार गए और इसी हार की हालत में थे कि हमने यकायक एक आवाज़ सुनी, जिसने तीन बार ऐ सारिया! पहाड़-पहाड़ (की तरफ़ रुख़ करो) को दोहराया। पस हमने अपनी पीठ पहाड़ से लगा दी और अल्लाह तआला ने हमारे दुश्मन को हरा दिया। लोगों ने कहा कि ऐ अमीरुल मोमिनीन! आप ही तो थे जो इस तरह चीख़े थे। —बैहक़ी, मिश्कात, 549

कुछ इस रिवायत के बारे में

1. सिहाहे सित्ता वालों ने ही नहीं, बल्कि चार सौ वर्ष तक किसी हदीस के जमा करने वाले ने इस रिवायत का तज़्किरा नहीं किया, इससे पहले सिर्फ़ झूठे वाक़दी ने इसको अपनी झूठी तारीख़ (मग़ाज़ी) में लिखा था। पांचवी सही हिजरी में बैहक़ी ने अपनी किताब 'दलाइलुन्नुबूवत' में इसका ज़िक्र किया और फिर इब्ने मर्दूया ने। यह रिवायत दो सनदों से आई है—

2. इब्ने अजलान रावी नाफ़ेअ़ से रिवायत करता है और इस मुहम्मद बिन अजलान के बारे में इमाम अक़ीली कहते हैं कि यह नाफ़ेअ़ की रिवायतों में इज़्तिराब का शिकार रहता है। (कभी एक बात कहता है, कभी दूसरी और यहां नाफ़ेअ़ ही से रिवायत कर रहा है) —तहज़ीबुत्तहज़ीब, भाग 9 :342

इमाम बुख़ारी ने इसका ज़िक्र ज़ईफ़ रिवायतों में किया है। (खुलासा तहज़ीबुत्तहज़ीब, ख़ज़रजी, पृ० 290) यहया क़त्तान कहते हैं कि नाफ़ेअ़ से रिवायत में यह मुज़तरिब है। (मीज़ानुल एतदाल, भाग 3, पृ० 102) इमाम मालिक कहते हैं कि इब्ने अजलान हदीस के मामलों का जानने वाला नहीं था। —मीज़ान, भाग 3 : 102

इब्ने अजलान का शार्गिद यह्या बिन अय्यूब ग़ाफ़िक़ी मिस्री भी, जो इस रिवायत का एक आदमी बहुत कमज़ोर रिवायत करने वाला है। अबू हातिम कहते हैं कि उसकी हदीस लिखी तो जा सकती है, मगर उससे हुज्जत लाना सही नहीं। इमाम नसई कहते हैं कि यह क़वी नहीं है। इब्ने साद का कहना है कि वह मुन्किरुल हदीस है। दारे क़ुत्नी कहते हैं कि उसकी कुछ रिवायतों में इज़्तिराब है और वह मुन्कर रिवायतें बयान करता है। इस्माईली कहते हैं कि उसकी रिवायतें हुज्जत नहीं। इमाम अहमद का क़ौल है कि वह बहुत ज़्यादा ग़लतियां करता है। हाकिम कहते हैं कि जब वह अपने हाफ़िज़े से रिवायत करता है, तो ग़लत रिवायत करता हैं अक़ीली ने इसको ज़ईफ़ों में गिना है। —तहज़ीबुत्तहज़ीब, भाग 11 : 187, मीज़ानुल एतदाल, भाग 3, पृ० 282

इस सनद पर निगाह डालिए और फ़ैसला कीजिए कि क्या इस रिवायत को इंसानों के ईमानों को तबाह करने के लिए छोड़ा जा सकता है?

2. दूसरी सनद यों है—

अबूबक्र अहमद बिन मूसा बिन मर्दूया से रिवायत है कि अब्दुल्लाह बिन इसहाक़ बिन इब्राहीम ने रिवायत किया और कहा कि हमें जाफ़र साग़ ने उन्हें हुसैन बिन मुहम्मद रोज़ी ने, उन्हें फ़रात बिन साइब ने, उन्हें मैमून बिन मेहरान ने, उन्हें इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने, उन्हें उनके वालिद ने बताया—

इस रिवायत में फ़रात बिन साइब रावी, जो मैमून बिन मेहरान का शार्गिद है, झूठा और रिवायत गढ़ने वाला था। इमाम बुख़ारी कहते हैं, मुन्करुल हदीस था। मुहद्दिसों ने उसे छोड़ दिया।

—अत्तारीख़ुल कबीर, भाग 4, पृ० 130

यह्या बिन मुईन कहते हैं कि इसकी कुछ हैसियत नहीं। दारे क़ुत्नी मतूरूक (छोड़ा हुआ) कहते हैं। इमाम अहमद बिन हंबल कहते हैं कि वह मुहम्मद बिन ज़ियाद बिन तह्हान की तरह है और इस पर भी मैमून बिन मेहरान से रिवायत करने में वही तोहमतें हैं जो मुहम्मद बिन ज़ियाद पर हैं और इस मुहम्मद बिन ज़ियाद को इमाम अहमद काना झूठा कहते हैं। इब्ने मदीनी कहते हैं कि मैंने जो कुछ उससे हासिल किया था, उसको मैंने फेंक दिया।

अबूज़रआ कहते हैं कि वह झूठ बोलता था। दारे क़ुत्नी कहते हैं कि वह कज़्ज़ाब (झूठा) था।

—लिसानुल मीज़ान, भाग 4, पृ० 430, 431, मीज़ानुल एतदाल, भाग 2, पृ० 325, भाग 3, पृ० 60

इस रिवायत की इन सनदों को देखिए और ईमान की मज़्लूमी पर आंसू बहाइए। यह बात भी न भूलिएगा कि यह नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के जुमा के ख़ुत्बे का वाक़िया बयान किया जाता है, जैसे इब्ने मरदूया से साफ़ किया है। दूसरे ख़लीफ़ा के ज़माने के जुमा के ख़ुत्बे की हाज़िरी का ख़्याल कीजिए, फिर देखिए कि इस रिवायत को इस भरे मज्मे से सिर्फ़ अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हु रिवायत करने वाले मिले और किसी दूसरे सहाबी या ताबई ने उसको बिल्कुल याद न रखा। क्या यह भी एक सुबूत नहीं कि यह रिवायत गढ़ी हुई बनावटी है और उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से करामत की नहीं, अल्लाह होने के इल्म व तसर्रुफ़ की सिफ़्तों से जोड़ती है, अल्लाह गवाह है कि बैहक़ी ने 'दलाइलुन्नुबूवत' नामी किताब लिख कर उम्मत पर सख़्त सितम ढाया है, बे-हिसाब झूठी रिवायतों को उन्होंने तंक़ीद के बग़ैर छोड़ दिया है और ये रिवायतें शिर्क की असली वजह बनी हैं और आज उसकी सज़ा दुनिया वालों को अल्लाह के अज़ाब की शक्ल में भुगतना पड़ रहा है। बैहक़ी के बाद मिश्कात के मुसन्निफ़ (लेखक) ने इस काम का बेड़ा उठाया है। अपनी किताब में गढ़ी हुई झूठी रिवायतों पर रिवायतें लाते चले गए हैं और कभी यह ज़हमत गवारा न की कि उनकी हैसियत से उम्मत को बाख़बर कर देते। सवाल किया जा सकता है कि ऐसा क्यों किया गया, तो जवाब यह है कि तसव्वुफ़ की ईजाद के बाद सच और झूठ की तमीज़ उठ गई और नाम के भले और अच्छे लोग हदीस के मैदान में भी उतर आए और इमाम मुस्लिम के सहीह मुस्लिम के मुक़दमे के बयान के मुताबिक़ झूठ उनकी ज़ुबानों पर बे-साख़्ता रवां हो गया। उन्होंने इस पर सोचे-समझे बग़ैर अपनी ज़ुबानें आज़ाद छोड़ दीं और झूठी रिवायतों की एक दुनिया आबाद हो गई । ख़ुद जिन लोगों ने यह खेती बोई थी, वे ही उसको उजाड़ते?

मुहम्मद बिन यह्या बिन सईद क़त्तान कहते हैं कि मेरे बाप यह्या ने

इर्शाद फ़रमाया कि हमने नेक लोगों (सूफ़ियों को उस ज़माने में नेक लोग और अहले ख़ैर के नाम से पुकारा जाता था) से ज़्यादा किसी को हदीस के मामले में झूठ बोलने वाला नहीं देखा। इब्ने अबी अताब कहते हैं कि फिर मुझसे मुहम्मद बिन यह्या की मुलाक़ात हुई और मैंने उस बात की जो मुझ तक पहुंची थी, उनसे तस्दीक़ चाही। उन्होंने कहा कि हां, मेरे वालिद फ़रमाते थे कि अहले ख़ैर (सूफ़ियों) से ज़्यादा तू किसी को भी हदीस के मामले में झूठा न देखेगा। इमाम मुस्लिम कहते हैं कि झूठ उनकी ज़ुबानों पर बे-साख़्ता जारी हो जाता है, चाहे झूठ बोलने का उनका इरादा भी न हो।

—मुक़दमा सहीह मुस्लिम : 13, 14 मिस्री

मालूम हुआ कि यों बिपता पड़ी है उम्मत पर और इस तरह वह उस अज़ीम 'शिर्क' में मुब्तला कर दी गई है, जिसकी अल्लाह के यहां माफ़ी नहीं, अक़ीदे की ख़राबी को अल्लाह तआ़ला कभी माफ़ न करेगा, अमल की हर ख़राबी माफ़ हो जाएगी अगर अल्लाह चाहेगा। क़ुरआन करीम कभी फ़रमाता कि अल्लाह के यहां सिर्फ़ 'शिर्क' ही की माफ़ी नहीं है और कभी यों कि जिसने शिर्क किया उस पर जन्नत हराम है, उसका ठिकाना आग है और मुश्रिक को कोई हिमायती न मिल सकेगा। सहीह हदीसों में भी इसी 'अज़ीम ज़ुल्म' का ज़िक्र है। कभी नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम यों इर्शाद फ़रमाते हैं कि जो आदमी इस हाल में मरा कि उसने अल्लाह के साथ किसी चीज़ को भी शरीक न किया, जन्नत उस पर वाजिब हो गई और वह जन्नत में दाखिल होकर रहेगा और जो आदमी इस हाल में मरा कि उसने अल्लाह के साथ किसी चीज़ को भी शरीक किया है, तो उस पर जहन्नम वाजिब हो गई और वह आग में दाखिल होकर रहेगा। (मुस्लिम) और कभी यों कि अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है कि मेरा कोई बन्दा अगर तुझ से इस हाल में मिले कि अमल की ख़राबियों से ज़मीन भर दी हो, लेकिन मेरे साथ किसी को शरीक न ठहराया हो (यानी अक़ीदा ख़राब न हो, तो मैं ज़मीन ही के बराबर माफ़ी के साथ उससे मुलाक़ात करूंगा।)

मालूम हुआ कि सही अक़ीदे के बग़ैर अमल की कोई क़ीमत नहीं और

अक़ीदा सही हो तो गुनाहगार से गुनाहगार बन्दा आखिरकार जन्नत में पहुंचकर रहेगा। इन नाम के नेकों और सूफ़ियों की शान में इमाम मुस्लिम इतनी तारीफ़ें करते हैं कि सहीह मुस्लिम के मुक़दमें में क़तादा रज़ियल्लाहु अन्हु एक और रिवायत लाए हैं कि उनकी महफ़िल से अबूदाऊद अल-आमा उठ कर गया, तो लोगों ने कहा कि यह कहता है कि मैंने अठारह बद्री सहाबा से मुलाक़ात की है। क़तादा ने कहा, यह ग़लत कहता है, यह तो पहले भीख मांगा करता था। (इससे ज़्यादा उम्र वाले) सईद बिन मुसय्यिब और हसन बसरी तक ने सिर्फ़ एक बद्री सहाबी साद बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु (अबी वक़्क़ास) से हदीस सुनी है किसी और से नहीं। (पृ० 170) अल्लाह तआला इमाम मुस्लिम पर हज़ार-हज़ार रहमतें बरसाए कि उन्होंने वाजेह फ़रमा दिया कि तसव्वुफ़ के सारे सिलसिले, जो हसन बसरी अन अली या हसन बसरी अन अबी बक्र बयान किए जाते हैं, ख़ालिस झूठ और खुला झूठ है। हसन बसरी का साद बिन अबी वक़्क़ास रज़ियल्लाहु अन्हु (बद्री) के अलावा किसी दूसरे बद्री सहाबी से 'सुनना' साबित नहीं है। वाज़ेह हो गया कि उन का न तो अली रज़ियल्लाहु अन्हु से सिमाअ़ है और न अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु से। इस तरह इस दीने तरीक़त की बुनियाद पर ही इमाम मुस्लिम ने तेशा (बसूला) चला दिया और बता दिया कि तसव्वुफ़ के वे सारे सिलसिले जो हसन बसरी अन अली या हसन बसरी अन अबी बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु से बयान किए जाते हैं, बिल्कुल झूठे हैं। हसन बसरी ने अली रज़ियल्लाहु अन्हु और अबुबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु से कुछ नहीं सुना।

फ़ जज़ाहुल्लाहु ख़ैरल जज़ा०
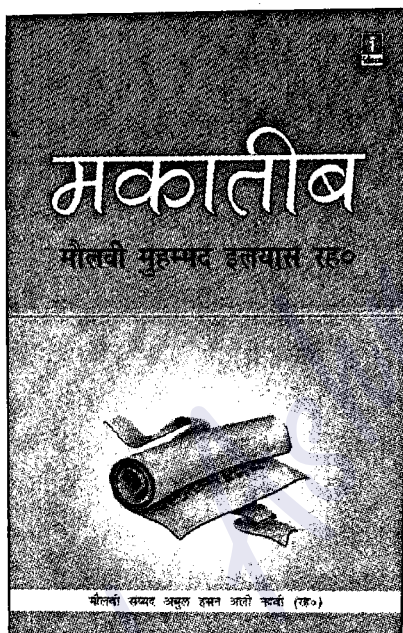
ISBN: 81-7101-556-5

किसी तहरीक और जमाअत के अग़राज व मक़ासिद और उसकी हक़ीक़ी रुह को समझने के लिए सब से अहम ज़रिया खुद जमाअत के बानी की सोहबत और उसकी रिफ़ाक़त है और उसके चले जाने के बाद सबसे क़रीबी और मुस्तनद ज़रिया उसकी किताबें, खुतूत और मलफ़ूज़ात हैं बल्कि खुतूत को कुछ हैसियतों से बाकी दोनों पर फ़ौक़ियत हासिल है।

आपके हाथों में जो किताब है यह मौलवी मुहम्मद इलयास (रह०) के खुतूत का मज्मूआ है जिसे मौलवी सय्यद अबुल हसन अली नदवी (रह०) ने मुरत्तिब किया है।

इस मजमूए में कुल 65 खुतूत हैं जिनमें शुरु के 34 खुतूत खुद मौलवी अबुल हसन अली नदवी (रह०) के नाम हैं, उसके बाद 5 खुतूत मियांजी मुहम्मद ईसा फीरोज़पुरी मेवाती के नाम हैं, फिर 20 खुतूत दूसरे कारकुनान और दोस्तों के नाम और आख़िर में 4 खुतूत मेवात के तब्लीग़ी कारकुनान के नाम हैं।

यह खुतूत बेहद मक़बूल, माज़ी की यादगार और क़ीमती सरमाया हैं।

आज के मौजूदा दौर में मुस्लिम मुआशरे की हालत बेहद खराब हो गई है। मुसलमानों ने कुछ और तरीके, ऐसे अपना लिए हैं जो शिर्क व कुफ़्र, बिदअत और खुराफ़ात के सिवा कुछ भी नहीं हैं, यही वजह है कि आज हम इज्तिमाई ज़िल्लत व रुस्वाई इफ़्लास व नादारी में घिरे हुए नज़र आते हैं। हक़ीक़त यह है कि हम उन आमाल से दूर हो गए जो खुदा और रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के यहां मत्लूब हैं और जिसके साथ हमारी दीन व दुनिया की निजात जुड़ी हुई है।

इस किताब में मुआशरे में फैली हुई बिदअत और खुराफ़ात के बारे में कुरआन व हदीस के हवाले से बताया गया है। शिर्क में घिरे लोगों को माफ़ न करने का एलान और मुसलमानों की सरफ़राज़ी का राज़ बताया गया है। कब्रों के बारे में मुख़्तलिफ़ अहकाम और कब्र की जियारत के हुक्म बयान किए गए हैं।

उम्मीद है यह किताब शिर्क, कुफ़्र, बिदअत और खुराफ़ात को दूर करने में मददगार साबित होगी।